भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या H.P
Class No. 891.4305
पुस्तक संख्या
Book No. K859
रा० पु०/ N. L. 38.

MGIPC--S4--9 LNL/66--13-12-66--1,50,000.

N. 1497
NATIONAL LIBRARY CALCUTTA
RARE BOOK
25 x 33 cm

कविवचनसुधा

साप्ताहिकपत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रस खानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जिय जानि १
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग। तासों आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग २

जिल्द ५ | काशी चन्द्रवार अधिक आषाढ़ कृष्ण ७ संवत् १९३१ | नम्बर ४५

कविवचनसुधा

[illegible] जुलाई सन् १८७४

[illegible] सज्जनों [illegible] मुक्तास्य धर्म्मा [illegible] सुकृती सूरयो मत्सराः सुः [illegible] जनो मोदितो प्राप्य दुःखं [illegible] दूरे भवतु रुचिरं काव्यपीयूष वृष्टिः॥

भारतवर्ष में अंग्रेजों का उपनिवेष

[illegible] इसी विषयपर विचार हुआथा उस में [illegible] महाशयोंने यही मत प्रकाश किया था कि अंग्रेजलोगोंको इस देश में आकर निवास करने से उभय पक्ष की हानि है परन्तु उस समय में इस प्रश्न की मीमांसा एक प्रकार से [illegible] थी किन्तु कुछ दिन हुए स्काटलैण्ड में भारतवर्ष [illegible] उपनिवेष नामक एक सभा संस्थापित हुई है इसका उद्देश इग्लण्ड और स्काटलैण्ड निवासियों का जिसमें भारतवर्ष में उपनिवेष हो इसी का यत्न कियाजाता है [illegible] सेक्रेटरी ड्यूक आफ आर्गाइल के निकट इसी विषय का एक निवेदन किया था कि न्यूजिलैण्ड और [illegible] में उपनिवेष करनेमें जिस प्रकार गवर्नमेंट सहाय्य करती रही उसी प्रकार भारतवर्ष में दो तीन सौ [illegible] के लोग जिस में उपयुक्त स्थान में निवास कर सकें इस निमित्त वह सहायता करै। स्टेट सेक्रेटरी ने इस प्रबन्ध में संमति न देकर कहा कि इस के लिये जो व्यय होगा वह भारतवर्षीय गवर्नमेन्ट के ऊपर निक्षेप नहीं हो सक्ता। उक्त सभाने यह उत्तर पाकर कुछ दिन तक स्तब्ध रही परन्तु फिर अब वही विषय लेकर आन्दोलन करती है गत १५ मई को इस सभाका एक समाज हुआ था और वहां कुछ प्रधान लोग भी एकत्र थे जिस प्रकार सभा में कार्य्य हुआ उससे ज्ञात होताहै कि सभा अपना उद्देश सहसा में न छोडेगी।

अंग्रेजों के इस देश में रहने से उपकार होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं भारतवर्ष में बहुत जगह खाली पडी हैं यह समुदाय स्थान में वास कर के यदि कृषिकार्य्य करैं तो देश की विशेष ऐश्वर्य्य वृद्धि होय जिस प्रकार व्यापारियों ने जंगल काट२ चाह और अहिफेन बो कर अपनी और देश की वृद्धि कियाहै उसी प्रकार अंग्रेज लोग भी यदि जङ्गल काट कर अपने रहने के योग्य कर सकै तो उन लोगों का इस देश में आगमन विशेष लाभदायक होगा। दूसरे इस देश के निवासी होने से अंग्रेजों की इस देश के ऊपर ममता होगी अब अंग्रेज लोग भारतवर्ष को प्रवास भूमि के समान समझते हैं ये लोग केवल द्रव्योपार्ज्जन के निमित्त आते हैं और द्रव्य उपार्ज्जन कर के चंपत होते हैं और यहां रहने से हम लोगों के साथ जो संस्कार होनाहै वह भी लोप हो जाताहै। और उन के उपार्जित द्रव्य का व्यय इग्लैण्ड में होताहै और भारतवर्ष के धन से इग्लैण्ड की वृद्धि करते हैं

अंग्रेज लोग यदि इस देश में बास करैं तो इस का बि

परीत होगा। वे लोग इंग्लैण्ड से द्रव्य लाकर इस देश में व्यय करेंगे और इस देश में जो धन उपार्जन करेंगे सो इंग्लैण्ड में न जा सकेगा। मुसलमान लोग अंग्रेजों की अपेक्षा सौगुन अपव्ययी थे परन्तु वे लोग इस देश के निवासी थे इससे उन का अर्थ समुदाय इसी देश में व्यय होता था और उनके अपव्यय से भी इस देश वासियों का उपकार ही होता था। तीसरे जिस प्रकार अमेरिका उपनिवेषित होकर स्वाधीन हुई वैसे ही भारत वर्ष में भी स्वाधीनता-लाभ कर सक्ता है परन्तु भारत वर्ष उपनिवेषित होने से इस के विपक्ष भी बहुत आपत्ति हैं। बीस करोड भारतवर्षी को पचास हजार अंग्रेज शासन करता हैं ये लोग प्रायः शिक्षित और सभ्य हैं परन्तु इन्ही लोगों के अत्याचार से सब भारत वर्षीगण दुःखी रहते हैं जबकि ये लोग यहीं रहेंगे तब उस में अर्ध शिक्षित नीच श्रेणी के अंग्रेज भी रहेंगे तब हम लोगों का मान संभ्रम कुछ भी न रहेगा जब ये लोग जंगल में जाकर बसेंगे और वहाँ उन का सुबीता न होगा तब वे लोग उत्तम २ निवास स्थान ढूंढ कर रहेंगे। नील के व्यापारियों के अत्याचार से देश एक बेर उलट पुलट हुआ जब सहस्रावधि नील के व्यापारी होंगे तब क्या पूछना है एक तो इस देश कें निवासी दुर्बल काहिल होते हैं जब वे उग्रस्वभाव कलह प्रिय यहां आवेंगे तब तो इस देश वासियों की पूर्ण – दुर्दशा ही है। गवर्नमेन्ट इन लोगों का यथार्थ बिचार न करैगी क्यों कि वे लोग बडे ढीठ हैं तब गवर्मेन्ट को यहाँ रहना कठिन हो जायगा। हम लोगों को जो अब कुछ सरकारी नौकरी चाकरी मिलती है वह उच्छिष्ट की उच्छिष्ट रहती है। जब अंग्रेज लोग यहाँ आकर रहेंगे तब केरानी प्रभृति को जो कुछ सरकारी काम काज है सो सब उन्ही लोगों का हो जायगा। और तब हम लोगों को हर जोतना पडेगा। हमारे देश में जो कुछ संपत्ति है वह जमी दारी है जब अंग्रेज लोग इस देश के निवासी होंगे तब हम लोगों की जिमी दारी भी हाथ से निकल जायगी और चिर स्थाई प्रबन्ध भी एकबारगी उठ जायगा हिन्दू जिमी दार के स्थान में चारो तरफ़ अंग्रेज जिमीदार दृष्टि पडेंगे। जमीदारी जाने से हम लोगों की बडी दुर्दशा होगी। प्रस्तुत हम लोगों के पास जमी दारी रहने से नील के व्यापारियों का कुछ वश नहीं चलता क्यों कि इस देश के नीति के द्वारा बिचार होता है गवर्नमेन्ट स्वेच्छाचारी होकर भी सावधानता से चलती है और हम लोगों का जीवन केवल जमीदारी है। अब अंग्रेजों का इस जमीदारी पर लोभ नहीं है कारण इस देश की जमीदारी लेने से इस देश में वास करना पडेगा। परन्तु इस देश में कोई अंग्रेज इच्छा पूर्वक नहीं रहता यह हम लोगों के विषय में अच्छा है परन्तु यदि ये लोग यहाँ आकर रहेंगे तो जमी दारी अवश्य लेंगे मेजिस्ट्रेट लोग इन्ही का पक्ष करते हैं इन लोगों के पास धन भी विशेष है जमीदारी लेने में इन को कठिनता कुछ भी न होगी और हम लोगोंने हिसाब कर के देखा है कि इस देश में दो सौ पैंसठ अंग्रेज जमी दार हैं और सत्ताणबे अंग्रेज ठीके दार हैं और इन्होने १०८४५० रुपये की जमीदारी और ६७९८८२ रुपये की ठीकेदारी भी है। गवर्मेन्ट को चिरस्थाई प्रबन्ध के अनुसार से साढे तीन कोटि रुपये से कुछ अधिक मिलता है इस देश की जितनी जमीदारी है उस का बीसवां हिस्सा अंग्रेजों के पास है अब बिचार कर के देखिये कि इस देश वासियों की अपेक्षा अंग्रेजों की संख्या कितनी है। दूसरे हम लोगों का एक और अनिष्ट होने की संभावना है। अंग्रेजी सभ्यता के स्रोत में बह कर हम लोग प्रायः उच्छिन्न दशा को प्राप्त हुए हैं और जितने २ इससे सम[illegible] हुए वे ध्वंस हुए हैं क्या जाने हम लोगों की क्या दुर्दशा होगी यह नहीं कह सक्ते इससे इन लोगों से दूर रहना यही अच्छा है॥ अ

राजभक्ति का मूल कहाँ है

जिन लोगों को इतिहास का गंभीर अर्थ ग्रहण करने की शक्ति नहीं है वे ऐसा सोचते हैं कि केवल बाहुबल के द्वारा जय लाभ हो सक्ता है अथवा जो राज्य चिरकाल से पराजित हुआ है उस की रक्षा हो सक्ती है परन्तु जो तत्व दर्शी लोग हैं वे यही कहते हैं कि न्याय और धर्म नीति के व्यतिरिक्त यश लाभ वा राज्य रक्षा करना दुष्कर है अभाग्यवश इस देश के अंग्रेज लोग भी इस बात का मर्म नहीं जानते क्यों कि वे कहते हैं कि इन बातों से राज्य भक्ति की हानि होती है परन्तु ये सब कितना अधिक राज विद्रोह प्रचार करते हैं इसे कोई भी विचार करके नहीं देखता। अंग्रेजों के अत्याचार से प्रजा का हृदय विदीर्ण होता जाता है हाँ यह बात कुछ नवीन नहीं है इस विषय को लिखते २ सम्पादकों की लेखनी घिस गई सोचते २ भारत वर्ष हितैषी लोगों का हृदय दुःख से पूर्ण हो गया हा! बडे आश्चर्य

…ातहै कि अत्याचार का निवारण नहीं होता। संप्रति राजकोट में एक अन्याय हुआ है उसे हमलोग अपने पाठक गण के अवलोकन निमित्त प्रकाश करते हैं राजकोट बम्बई प्रेसीडेन्सी के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध राज्य है यह देशीय राजा के आधीन है, गत अक्टोबर मास मे जोंकी नामक एक भृत्य राजकोट के पार्श्ववर्ती एक कूप के किनारे पर बैठकर दन्तधावन करता था एक दिन वहाँ के पोलिटिकल असिस्टेन्ट और मजिस्ट्रेट आस्टन साहब उसी मार्ग से जाते थे मजिस्ट्रेट साहब उसके निकट गए और चाबुक से उसे इतना मारा कि शरीर में से रुधिर की धार बहने लगी। उस हतभागी मनुष्य ने पोलिटिकल एजेन्ट से निवेदन किया तब उक्त साहब ने अपने श्रीमुख से कहा कि तुम्हारा उचित दण्ड हुआ है, अनन्तर उसने बम्बई गवर्मेन्ट से प्रार्थना किया तब वहाँ के प्रशंसित गवर्नर उडहौस साहब ने निम्न लिखित मति प्रकाश की, गवर्मेन्ट आस्टन साहब के विषय में अप्रसन्नता प्रगट करती है।

अंग्रेज लोग कहा करते हैं कि समाचारपत्र वाले राजभक्ति कभी प्रकाश नहीं करते भला इस प्रकार के असत्य अत्याचार के दृष्टान्त को सन्मुख देखकर हमलोग कैसे राजभक्ति प्रकाश करैं यदि हम लोग यह बात कहैं कि राजा के सब कार्य देखकर बहुत प्रसन्न हैं इसका विश्वास कभी कोई न करेगा यदि भारतवर्षीय अंग्रेज लोग वा राजपुरुष अपने कार्य न्याय सत्य व्यवहारादि करते और प्रजा को प्रसन्न रखते तो हम लोगों को लिखकर राजभक्ति प्रकाश न करनी पडती वह स्वतः प्रसिद्ध होती।

विशेषतः राजा और प्रजा दोनों पृथक् धर्म और पृथक् जाति होने से परस्पर में अविश्वास तथा अभक्ति है इस दशा में न्याव और सत्य की रक्षा करना उचित है परन्तु इस के विपरीत आचरण करते हैं हम यही कहैंगे कि इन्ही पक्षपाती अंग्रेजों के दोष से भारतवर्षवासियों की गवर्मेन्ट से अभक्ति होती है॥

हम इस बात से बडे प्रसन्न है कि बहुत से अंग्रेजी समाचारपत्र के संपादकों ने इस विषय का उल्लेख किया॥

तुर्किस्तान और ईरान में कलह

तुर्किस्तान और ईरान इन दो देशों में कलह होने का समय आया है इन में के निवासी मुसलमान धर्म के हैं परन्तु किसी मत भेद होने से यह प्रसंग देख पडता है लंण्डन ता॰ २५ से ज्ञात होता है कि कुछ ईरान के लोग तुर्किस्तान में यात्रा करने गए थे तब वहाँ वालों ने इनकी बडी अप्रतिष्ठा की इसलिये ईरान वालों ने तुर्किस्तान के सीमारक्षक सेना पर चढाई किया और ईरान में गए हुए तुर्की लोगों को कैद किया अब इस बात से तुर्किस्तान के राज्याधिकारी यह कहते हैं कि यदि ईरान वाले हमारी संमति से न चलेंगे तो हम भी चढाई करेंगे अभी यह कलह प्रारंभ नहीं हुआ है परन्तु समय आचुका है अब इन दो मुसलमानी राज्यों के समर प्रसंग में तुर्किस्तान वाले ही का जय होने का संभव है परन्तु हमको यह ज्ञान पडता है ये दोनो देश भी परस्पर स्नेह भाव से रहते तो बहुत अच्छा होता क्यौं कि रशियन लोग तुर्किस्तान पर चढाई करने के समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं और यह समय तो उनको बहुत ही अनुकूल देख पडता है जो हो परन्तु इस लडाई से अनेक प्रकार के घात होंगे

बनारस अखबार स्क्वायर! आप पीछे से समझे गुरू तो हैं ही हैं संस्कृत मिली हिन्दी आप को किस ने सिखाई बडों के सिवाय और चूक कौन निकालेगा और हमारे गुरू तो परमेश्वर हैं एक वृत्ति के लोग तो बंधु होते ही हैं उसपर तो वे बिहार बन्धु हैं और आप क्या शत्रु हैं? और जमालो बीबी बनकर इधर उधर लडाने से कोई लाभ नहीं· बस फिर कभी।

समाचारावली॥

चीन के दक्षिण भाग में बडी वृष्टि होने से अनेक गृह नष्ट हुए।

बम्बई के एक पार्सी को स्मिथ साहब और उनके मेम ने मिल के मारा जब पार्सी ने नालिश किया तब साहब को दस रुपये और मेम साहब को पांच रुपये दण्ड हुआ।

अमेरिका में एक ऐसा यंत्र बना है कि उसके द्वारा मनुष्य आकाश में उड सक्ता है उसका मूल्य एक लाख रुपये हैं।

रूस के महाराज के भतीजे को वहाँ के पुलीस वालों ने चोरी के दोष में पकडा।

ई॰ इं॰ रे॰ वे द्वारा प्रति दिन एक हजार टन अन्न जाता है।

स्थान बेगूसराय जिला मुंगेर से समाचार मिलाहै मौजे बिहट परगना मलकी में एक जमीदार ब्राह्मण दो भाई थे उन दोनों को एक २ लडकी थी एक काली दूसरी गोरी इन दोनों के विवाह के लिये बरात आई दोनों लडके आपुस में चचा भतीजे थे चचाकी अवस्था ७० बरस की थी और भतीजे की २० गोरी लडकी से वृद्ध विवाह करना चाहता था भतीजा बिगडा तब दोनों विवाह गृह में गये विवाह की रीति आदि होने लगी परन्तु सेन्दुर दान के समय भतीजेने बलात्कार दोनों के मस्तक में सेंदुर दे पालखीपर सवार कराकर उन्हे अपने घर ले भागा सुनाहै कि इस की नालिश होने वाली है देखना चाहिये क्या होताहै !!!

गया—में एक मनुष्य जिस्का बयस तीस वर्ष का था भीत पर गोली का संधान छ हाथ के दूरी से करता था परन्तु भीत पत्थर की थी अकस्मात् गोली लौटकर उस बिचारे के छातीपर आबैठी यद्यपि डाक्तरोंने बहुत उपाय किये परन्तु सब निष्फल हुए हा उस बिचारेने व्यर्थ अपना प्राण खोया।

सरकार जो नवीन अढाई करोड का ऋण हिन्दुस्तान से ले रही है उस में दस लाख रुपये महाराज पटियाला देने वाले हैं इन के पास सरकारी प्रामिसरी नोट ६० लाख के हैं ये १० लाख इससे अलग हैं।

लण्डनटाइम्स के स्वामीने प्यारिस से लेकर अपने कार्य्यालय तक स्वतंत्र तार यंत्र लगया है इस्से प्रेरितपत्र संपादकों के बडे २ पत्र आकर प्रसिद्ध होते हैं।

हिन्दुस्तान के पोस्ट मास्टर जनरल मि॰ मांटीथ ये जरमनी और हिन्दुस्तान के मध्य में डांक स्वतंत्र आनेजाने के प्रबन्ध के निमित्त जरमनी गयेथे सो उस्का प्रबन्ध कर के आगये।

महाराज होलकर ने बम्बई से आखेट के निमित्त आए हुए एक रशियन राजपुत्र को ता॰ २२ के दिन उन के निमित्त भोजन समारंभ किया था और सब प्रकार उनकी शुश्रुषा में स्थित थे।

सन् १८७३ में निम्न लिखित रेलवे अपघात सर्व हिंदुस्तान भर में हुआ सब मिलाकर छिहत्तर बेर गाडियोंने टक्कर खाई उस्से १६६ मनुष्य मरगए २७३ जखमी हुए सन् १८७२ में अपघात से २११ मरे और २२४ जखमी हुए।

बम्बई—एक मनुष्य ने आभूषण के निमित्त एक वेश्या को मारडाला।

लिसबन और दक्षिण अमेरिका के बीच में ता॰ २३ से तार बनने का काम आरंभ हुआ है।

पबना के औषधालय में एक मुसलमान रोगी आया उसका पेट ऐसा फूला हुआ था कि देखते ही भय लगता था वहाँ के डाँक्टर ने उसे एक ऐसा औषध दिया कि जिस्से उस्को कैई दस्त हुए और मल दस्त के साथ उस के पेट से अए अद्भुत कृमि बत्तीस हाथ लम्बा और मोटा निकला उस जानवर को बिच्छू के तरह बहुत से पैर थे और उसके साथ उस्के बहुत से बच्चे भी निकले

बह्रानपूर—के एक पाठशाला के प्रथम अध्यापक ने "वाईज यूनिटी" नाम एक नवीन सभा नियत की है।

गत मार्च महीने के अंत तक हिन्दुस्तान में से ५४९६०७७८० रुपये का माल बाहर गया और बाहर से हिन्दुस्तान में ३२५९३६०८८ रुपये का माल आया

काशी

गत बुधवार से पूछल तारा उदय हुआ है इस्का फल बहुत बुराहै देखना चहिये क्या होताहै।

अमेरिका—की मिस ब्रिगनामक एक डाक्तरिन आई है उसने राजा के दरवाजे पर एक औषधालय स्थापित कियाहै यह बडी चतुर है स्त्रियों का औषध बहुत अच्छी तरह करती है यदि कोई घर बुलावे तो जाती है।

श्रीयुत राजा शंभूनारायण सिंह के यहाँ म्यूनीसिप्यालिटी के नवीन नियम बनने के निमित्त एक सभा हुई थी हमने सुनाहै कि उस दिन बहुत कम सभासद थे उक्त सभाको उचितहै कि उन नियमोपर भली भांति सब सभासदों की संमति लेकर प्रचलित करैं।

कविवचनसुधा वा मैगजीन की पृथक् न्यौछावर अग्रिम ६) वार्षिक है और पीछे देने से ७) रु॰ देना होगा परन्तु जो दोनो पत्र लेंगे उन को अग्रिम केवल १०) रु और पीछे १२) रु॰ देना होगा, और महसूल ३) अलग है तथा क॰ व॰ सुधा एक प्रति का =) और मैगजीन के प्रति कापी का ।।) मूल्य है और इश्तिहार का प्रति पङ्क्ति =) और विशेष पूछने से ज्ञान होगा।

बनारस में श्री हरिश्चन्द्र चंद्रिका यन्त्रालय के कार्माध्यक्षों ने संपादकों के अर्थ छापा।

रजिस्टर्ड नम्बर ३

NATIONAL LIBRARY
No. 24086
Date 21.8.68
CALCUTTA
33 Um

कविवचनसुधा

साप्ताहिकपत्र

नित नित नव यह कविवचन सुधा सकल रस खानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जियजानि
सुधा सदा सुर पुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग । ताते आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग २॥

जिल्द ५ काशीचन्द्रवार अधिक आषाढ़ कृष्ण १० संवत १९३१ नम्बर ४६

कविवचनसुधा
चंद्रवार १३ जुलाई सन १८७४

दुःखदुष्टैः सतां मा भवतु रतिरिनैः स्वाद्य मुक्तास्यधर्मे
स्वायत्ता स्यात्प्रजारा व्रत करतु कृतौ खर यो मत्सरः स्युः।
स्त्री पुंसौ तुल्यमीशो वहु भवतु जनो मोदितोऽभ्याप्य दुःखं
ग्राम्योक्तिभ्यो विदूरे भवतु रुचिरलं काव्य पीयूषवृष्टिः॥

क्या हिंदुस्तान समृद्धशाली होता जाता है १

अभीतक किसीको यह भ्रम है कि इंगलण्ड भारतवर्ष से एक पैसा भी नहीं लेता। दस वर्ष हुए होंगे यह विश्वास सभी को था परन्तु नाद्साहब अपनी "इण्डियन एकानमिष्ट" नामक पत्रिका में इस विषय पर एक सुंदर प्रस्ताव लिखकर बहुतों का संदेह दूर कर दिया है वे अब बंगाल गवर्नमेन्ट के सहकारी सेक्रेटरी हुए इससे उनकी मति फिर गई है परंतु जब वे उक्त पत्रिका के स्वतंत्र संपादक थे उस समय उनकी मति कुछ और ही थी उन्होंने उसमें यह प्रगट किया है कि इंगलण्ड प्रतिवर्ष में सोलह करोड़ रुपये शोषण करता है कुछ समय अनंतर बम्बई के प्रसिद्ध मि॰ दादाभाई नौरोजजी जब इंगलण्ड गए थे उन्होंने वहाँ एक वक्तृता करके यह सिद्ध किया था कि इंगलण्ड धीरे २ इस देश को निर्धन करता है और एक अनुमानिक हिसाब करके देखा था कि इंगलण्ड प्रति वर्ष में बारह करोड़ रुपये लेता है और उसी के साथ यहाँ की प्रजा कैसी निर्धन हो गई है यह भी सूचित किया अंग्रेजों के आगमन के पूर्व इस देश की अवस्था किस प्रकार थी और अब किस प्रकार है यह केवल एक विहार के ओर देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है। हिन्दू राजाओं के समय की तो कोई बात नहीं है मुसलमानों के समय में भी बहुत कुछ ऐश्वर्य था एक अंग्रेज इतिहासवेत्ता कहते हैं कि विहार के समान धनधान्य से पूर्ण स्थान दूसरा है कि नहीं यह हम नहीं कह सक्ते परन्तु अब उसी स्थान को देखा जाय कि उसकी क्या दशा हो रही है जिन लोगों ने तिरहुत की पूर्व दशा देखी है वे इस अवस्था को देख कर कम्पित हो परम शोक पूर्व आँसू निकालते हैं उसका जीर्ण कलेवर मलीन वस्त्र और पर्नकुटी आदि देखकर यह नहीं निश्चय होता कि वह कभी धनवान था अब उसके निवासी दिन भर में एक बेर खा कर कालक्षेप करते हैं और जिस पदार्थ को वे खाते हैं उन्हे दूसरे नगर में पशु भी नहीं पूछते अंग्रेजों के आगमन से उस देश में नील की कोठियाँ बहुतायत से हुई हैं इसी से वह स्वर्ण भूमि रक्षा के समान हो गई प्रधान दोष इनका यही है कि उधर तो कर बैठाया इधर वस्तुओं के आवागमन का प्रबन्ध कर दिया दिन २ मूल्य भी बढ़ाते गये इसी से हम लोग भी निर्धन दशा को प्राप्त होते जाते हैं यद्यपि हम लोगों को पहिले विशेष आपन नहीं था तो भी सब वस्तु अल्प मूल्य में बिकती थी इससे किसी प्रकार की कठिनता नहीं होती थी अब तो हम लोगों के मुख का ग्रास छीन कर इंगलण्ड आनन्द करता है यह प्रत्यक्ष है विलायत के व्यापार की वृद्धि होने से हम लोगों का व्यापार सब निर्मूल हो गया और उस देश की अलाय बलाय और दुःख दुर्भिक्ष ने यहाँ आकर हम लोगों को कष्ट दिया देखो पहले प्रत्येक ग्राम में शतावधि मनुष्य कपड़ा बिन कर अपने परिवार का पालन करते थे अब सब धीरे २ खन्द होता जाता है —

केवल कपड़ा ही नहीं किन्तु जो कुछ हमारे प्रयोजन की वस्तु हैं सभों के बनाने वालों का व्यापार नष्ट हुआ और केवल वाणिज्य के कारण से हम लोग इस दशा को प्राप्त हुए हैं हम लोग परिश्रम करैं उस्का उपभोग वे लोग करैं हमारी बनाई हुई वस्तु का अल्प मूल्य देकर खरीदें और फिर वही वही वस्तु बहु मूल्य पर हम लोगों के हाथ बेंचें जैसे हम लोग रुई पैदा करते हैं वे उस्का सूत वस्त्र आदि बनाकर बहु मूल्य पर हम को देते हैं यदि यहां बनाते तो क्यौं अधिक देना पड़ता एक बेर अंग्रेजी व्यापारियों ने इस देश से नौ लाख एकीस हजार एक सौ तीस रुपये की चीनी खरीद कर लेगये फिर उस्को स्वच्छ करके इसी देश में साठ लाख एक्यासी हजार तीन सौ दस रुपये पर बेंचा अर्थात् सतगुना लाभ हुआ इसी प्रकार देश का सब द्रव्य शोषण हो जाता है अब इंगलण्ड में धन का स्रोत बड़े वेग से बहता है यही कारण है कि वहां द्रव्य का इतना आदर नहीं है यदि अंग्रेज लोग भारतवर्ष में रहकर अपना द्रव्य व्यय करके व्यापार करते तो कुछ काल पाकर भारत वर्ष पूर्ववत् हो जाता परन्तु यह देश अंग्रेजों का प्रवास स्थान है इससे कुछ नहीं हो सक्ता रहने की कौन कहे अपने उपार्जित द्रव्य में से एक कपर्दिका भी यहां व्यापार में नहीं व्यय करना चाहते दूसरी आपत्ति यह है कि भारत वर्ष के ऊपर रशियन की कुदृष्टि लगी है उस में कुछ अंग्रेजी व्यापारियों का यह मत है कि यदि भारत वर्ष समर्पण करने से भी परस्पर का स्नेह और बन्धुत्व प्राप्त हो तो कुछ चिन्ता नहीं यह भी एक कारण है कि वे लोग द्रव्य व्यय करके यहां कोई व्यापार नहीं करते इस दशा में धन की वृद्धि होना बहुत कठिन है अब तो यह दिन २ अर्थ शून्य होता जाता है नहीं मालूम परिणाम में इस की दशा क्या होगी यह नहीं कह सक्ते इस देश के समाचार पत्र प्रायः दीन दुखी प्रजा का वृत्तान्त गवर्नमैन्ट को सर्वदा सूचित करते रहते हैं तिस पर भी वह हम लोगों पर असह्य कर स्थापन करके निश्चिंत सोई है

पूर्वबङ्गालरेलवे

कुछ समय पूर्व हम लोगों ने सुना था कि रेल में आने जाने का जिस्से सुबीता हो इस्का उद्योग गवर्मैन्ट कर रही है परन्तु हम लोग उस्का कोई चिन्ह नहीं देखते हमारे पाठकगणों में से बहुत से लोग इस बात को जानते होंगे कि पूर्व बंगाल रेलवे की चतुर्थ श्रेणी के गाड़ी की कैसी अवस्था है यह सुनकर लोग अवश्य प्रसंन होंगे इस गाड़ी में बहुधा बहुत मनुष्य कबूतर के दरबे के समान भर दिये जाते हैं यह गाड़ी मनुष्य के आवागमन के योग्य नहीं है इसमें जो लोग चढ़ते हैं उनको जाड़े के दिनों में जाड़ा ग्रीष्म में सूर्य की आतप्त किरणों से जलना और वर्षा में भीगना पड़ता है तिस पर भी बैठने को स्थान नहीं मिलता ग्वाला जिस प्रकार एक गृह में अनेक भइंसो को भर देते हैं उसी प्रकार रेलवे कम्पनी चतुर्थ श्रेणी में बैठने वाले मनुष्यों को बन्द किया करती है हम लोगों को इन की वेदना देखकर बड़ा दुःख होता है यहां तक कि एक स्त्री अपने छोटे बालक को गोद में लेकर दूध पिला रही है इतने मे एक हरमुष्टक मनुष्य भरी गाड़ी में आ बैठा स्थान उस्को बैठने के योग्य न मिलने के कारण उसने अपना पैर उस लड़के के पैर पर रख दिया वह बिचारा रो रहा है वा रोते २ मूर्छित हो गया है पर यह सब अनर्थ देखकर रेलवे कम्पनी कुछ प्रबन्ध नहीं करती वाह वा - गाड़ी क्या है मानो सांसत घर है दरिद्रों ने भाड़ा कम लगने के कारण चतुर्थ श्रेणी का टिकट लिया रेलवे कम्पनी के कार्याध्यक्षों ने यह सोचा कि जितने अधिक भरैंगे उतना ही विशेष लाभ होगा वे बिचारे नियत स्थान पर पहुंचते २ अधमरे से हो जाते हैं और उन बिचारों का दुःख कुछ भी नहीं सूझता बड़े आश्चर्य की बात है कि गवर्मेन्ट इस्का कोई प्रबन्ध नहीं करती यदि रेलवे कम्पनी उक्त श्रेणी के निमित्त बेंच लगादे और यत्ता के बाहर गरीबों को न भरे। यदि रेलवे कम्पनी इस्का प्रबन्ध शीघ्र न करे तो सरकार को अवश्य ध्यान देना उचित है।

एक मैंमने मुसलमानी धर्म ग्रहण का उद्योग किया वह एक अविवाहिता नवयौवना रमणी है इसका पिता एक प्रतिष्ठित मनुष्य किरांची का रहने वाला है यह मैंम एक मुसलमान युवा के प्रेम में आबद्ध होकर उसके निमित्त गृह परित्याग का उद्योग करती थी पर उसके माता पिता को मालूम होने से कार्य सिद्धि नहीं हुई परन्तु वह युवती स्पष्ट कहती है कि हमने उस्के साथ गन्धर्व विवाह कर लिया और जब तक यह शरीर वर्त्तमान है तब तक हम उस्को अपने प्राण से अधिक स्नेह करैंगे। वाह क्या अंग्रेजों के धर्म और समाज में कीड़ा लगा है जिन मुसलमानों को किरिस्तान करने के निमित्त पादरी लोग भ्रमण करते हैं वेही उनके बहू बेटी को निकाल कर भ्रष्ट करने लगे इससे और अधिक लज्जा की बात कौन है जिस अंग्रेज ने यह संवाद प्रकाश

किया है उसने बड़े क्रोध पूर्वक लिखा है कि जिस मुसलमान ने इस युवती को बिगाड़ा है उसको फाँसी देकर उसके शरीर का टुकड़ा २ कर डालना चाहिये। उस मुसलमान को दण्ड न देकर केवल स्त्रियों की स्वाधीनता कुछ न्यून कर दी जाय और युवती विवाह न होने पावे।

समाचारावली

श्रीमती महाराणी के रूस जाने का समाचार प्रसिद्ध था वह असत्य है।

श्रीमान् गवर्नर जनरल ने यह आज्ञा दी है कि अब आगत ग्रीष्म ऋतु में जो पहाड़ पर जाँयगे उन के मासिक में से प्रति सैकड़े तेंहतीस टका काटा जायगा।

बरहानपूर—में कई ब्राम्हणों ने दुष्काल के कारण दस रुपये पर अपने लड़के बेंचे।

मंद्राज—का नेटिव पब्लिक ओपीनियन समाचारपत्र अब सप्ताह में दो बेर मुद्रित होता है।

ब्रह्म देश के महाराज ने बंगाल के दुर्भिक्षपीड़ितों के सहायतार्थ १००००) मुद्रा भेजा है।

निजाम की सेना—३६४०० पदाति ८२६२ अश्वारोही २६५ गोलंदाज और ७३४ तोपें हैं।

श्रीमान् गवर्नर जनरल बहादुर प्रथम आसाम में जाकर फिर मंद्राज जाने वाले हैं।

नागपूर—में दो कम्पनी देशी माल के वृद्धि के निमित्त हुई हैं प्रथम कम्पनी नौ लाख रुपये एकत्र कर चुकी दूसरी ने भी सात लाख एकत्र किये हैं उमरावती में भी एक स्थापन करने का उद्योग हो रहा है।

पूना—में टाउन हाल के समान एक गृह सार्वजनिक सभा के निमित्त बनने वाला है।

बङ्गाल—वर्षा अच्छी हुई अन्न का भाव अभी तक चढ़ा ही जाता है सहायता मिलने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जाती है साम्प्रत सब मिला कर बयालीस लक्ष मनुष्यों की सहायता की जाती है।

समरकन्द के रशियन गवर्नर के आज्ञानुसार सरदार अब्दुल रहमान खाँ ने करशी से चार जुई तक मार्ग बनाने का काम अपने स्वाधीन रक्खा था हिसार शहर के निकट कुछ गड़ा हुआ द्रव्य मिला इसका समाचार रशियन गवर्नर को लिखा उन्होंने उत्तर लिखा कि रशियन सरकार को इस द्रव्य के लेने की इच्छा नहीं है वह द्रव्य सरदार खाँ ले।

बङ्गाल—गत १५ जून तक सब मिला कर १७७०७३२ मनुष्य, पटना, भागलपूर, राजशाही, छोटानागपूर, वर्धमान, कोच बिहार, इन स्थानों में काम करते थे।

पञ्जाब—के मुसलमान भये हुये मि॰ शेख माल्वेल साहब का कुछ दिन शोध नहीं था सो सुना है कि देहरा में अपनी नई स्त्री के साथ रहते हैं।

इलाहाबाद—मि॰ ब्लान्शेड साहब जिन्होने स्टाम्प की चोरी की थी उन को सात वर्ष के कारागार की शिक्षा हुई।

लाहोर—मैं एक मनुष्य ने थानेदार की वरदी पहिन कर कई मनुष्यों को धमकाया और लूटमार किया वह बलवे के समय के एक सेना का स्वार था वह पकड़ा गया न्याव होने पर छ वर्ष के कारागार का दण्ड हुवा।

बरेली के निकट राम गङ्गा पर एक पुल बनाया गया है।

श्रीमती महाराणी बिक्टोरिया को नाती हुआ इस के सहित अब महाराणी को पौत्र और दौहित्र मिलाकर २२ हैं।

रशियन की सैन्य सङ्ख्या पन्द्रह लाख बीस हजार है। और इंगलैण्ड की सैन्य संख्या केवल चार लाख उन्नासी हजार है।

प्रथम टैम्स नामक पत्र इंगलण्ड के सब पत्रों में प्रधान था परन्तु टेलीग्राफ़ और डेली न्यूज इत्यादि उस के विरुद्ध हुए हैं यद्यपि इन की प्रतिष्ठा न हो पर ग्राहक संख्या में ये दोनों पत्र श्रेष्ठ हैं पर टैम्स ने अपने पुनःउद्धार के निमित्त एक उपाय किया है अंग्रेज लोग फ्रान्स का समाचार बड़े आग्रह से पढ़ते हैं इस लिये इस पत्र के स्वामी ने प्यारिस से अपने कार्यालय तक एक स्वतंत्र तारयंत्र लगाया है इस के द्वारा प्रति दिन फ्रान्स के नए २ समाचार अपने ग्राहकों को सुनाता है।

रि॰ खासाम महमूद नामक एक साहब मुसलमान हैं ये प्रथम किरिस्तान पादरी थे अमेरिका से ख्रिस्त धर्म प्रचार के निमित्त आए परन्तु अब ये मुसलमान हुए हैं इन्होंने महाराष्ट्री भाषा में एक धर्मपुस्तक (कूरान) अनुवाद किया है

श्रीमती परमोदार महाराणी स्वर्णमई ने तीन सौ रुपये पबना के औषधालय को दिया है।

महाराज रूस इस बात से अप्रसन्न है कि उन का आदर भाव श्रीमती महाराणी और उन की प्रजा ने यथोचित नहीं किया।

श्रीमान् नीजाम हैद्राबाद की अवस्था अभी केवल दस बरस की है।

प्रेरितपत्र

जो पत्र इन स्तंभो में प्रकाश होते हैं हम उनके उत्तरदाता नहीं हो सक्ते

श्रीमान् क॰ व॰ न॰ सु॰ सं॰ मीपेषु ॥ ✿ ॥

स्त्री शिक्षा का परिणाम ॥

यह देखिये। हमलोग अपने घरों ही में बैठे हैं वहां बाजार गलियों में कलियां तोड़ी जाती हैं!! क्यों अपने मनमधुकर को उधर नहीं उड़ाते जहां बेला चमेली केतकी मालती अपने सुबास और रूप रंग से सब लोगों को इन्द्र पुरी का सुख दरसाती है और अपना सज धज दिखलाय बालक युवा वृद्ध सब का मन तरसाती है? यह भी तो शिवपुरी है ऐसा क्यों न हो? रूपयौवन तो यहां के विख्यात ही है और यह आप जानते ही हैं आजकाल वहां रसाल मञ्जरी के ग्राहक बिन दाम कौडी दिये इस अमृत फल का सब रस चूस लिया करते और मक्खियों के लिये धीरे से छिलके और गुठलियां कोठे के नीचे फेंक देते। हम एक दिन बाग बगैचा क्यारी फुलवारियों में घूमते फिरते इधर उधर की हवा खाते अपने नेत्रों को अद्भुत और अपूर्व वस्तुओं को अवलोकन से आनन्दित करते चौक में जा निकले तो क्या देखते हैं कि वह स्थान अत्यन्त सुरम्य और मनोहर बना है कि जैसा राजकुमार के आन के समय रचा था जो २ अनूपम वस्तु देखने में आईं यदि उन का कुछ भी वर्णन करें तो जो बात हम कहना चाहते हैं वह रह जायगी हम को वहां सब से चमत्कारिक वस्तु जो देखने में आई सो क्या थी? बहुतसी कुमारी लड़किये किञ्चित् स्फुटयौवना बजार में घूम २ कर कागज पेनसिल इत्यादि वस्तु लेती हैं और यहां के लुच्चे लोग उनपर बोली ठठोली बोलते हैं हम यह सब वृत्तान्त देख बड़े आश्चर्य में आये कि ये सब लड़कियां कौन हैं और ऐसा निर्लज्ज हो क्यों बेधड़क बाजार में घूमती हैं और कागज पिनसिल इत्यादि वस्तु जो इन के काम की नहीं क्यों मोलाती हैं लोगों ने कहा आप नहीं जानते ये सब लड़कियां बाला पाठशाला में पढ़ती हैं यह बात सुन मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि हाय स्त्री शिक्षा का क्या यही फल हुआ? क्या इसी के लिये हमारे श्री बाबू हरिश्चन्द्र इत्यादि पंडित सुजान ने बालाबोधिनी आदि पुस्तकें छाप छाप कर अपना अमूल्य काल व्यर्थ खोते हैं कि स्त्रियां पढ़ लिखकर स्वेच्छाचारी होना और अपने बाप ससुर का नाम डुबोना चाहती हैं? पर जो सोचा तो यह अनुमान किया कि यह स्त्री शिक्षा का फल नहीं है बरन उस कार्य प्रनाली का यह दोष है जो उक्त विषय के कार्य्याध्यक्षों की असावधानता और अम्यता से महीने के लालच से अपात्र स्त्रियों के पढ़नि से होता है।

आपका एक ग्राहक

काशी

हम मिरज़ामुराद के डांके का समाचार पहले लिख चुके हैं अब न्याव होने पर ग्यारह मनुष्य अपराधी ठहरे और वे सब डामल भेजे गये।

आजकाल यहां चोरी बहुत होती है पर चोर पकड़े नहीं जाते इससे पुलिस का प्रबन्ध कैसा है यह स्वतः प्रत्यक्ष है।

शिवालय घाट पर एक डोंगी डूब गई सुना है कि दस बारह मनुष्य डूब गये इसका कारण यह है कि ठीके दार भाड़े के लालच से बहुत मनुष्यों को भर देता है खेद की बात है कि इसका कोई प्रबन्ध नहीं करता।

विज्ञापन

गाज़ीपूर के कलेक्टर साहेब के आज्ञानुसार सर्व साधारण को ज्ञात किया जाता है कि जिस किसी को कर्ज़ या किसी प्रकार का दावा मास्सूमा बेगम और सादुन्नसा बेगम जागीरदार सुनवानी परगने बलिया ज़िला गाज़ीपूर के ऊपर करना हो तो ता॰ ३० जुलाई सन् १८७४ के पहले मैं कागज़ात सबूत दावे के हमारे पास हाजिर हो।

कलेक्टर गाजीपूर

हम अपने ग्राहकों को सूचित करते हैं कि उन को जो पुस्तकें हमारे कार्यालय से मगाना हो उन का मूल्य प्रथम भेजैं क्योंकि बार २ पत्र भेजने के निमित्त एक क्लर्क का सर्वकाल उसी में व्यतीत होता है।

चिंतामणि कार्यसंपादक

कविवचनसुधा वा मैगज़ीन की पृथक् न्यौछावर

अग्रिम ६) वार्षिक है और पीछे देने से ७) देना होगा-परंतु जो दोनों पत्र लेंगे उन को अग्रिम केवल १०) रु॰ और पीछे १२) रु॰ देना होगा और महसूल २) रु॰ अलग है तथा कवि॰ सुधा एक प्रति का =) और मैगजीन के प्रति कापी का ।) मूल्य है और इश्तिहार के प्रति पंक्ति का =) है विशेष पूछने से ज्ञात होगा।

बनारस में श्री हरिश्चंद्र चंद्रिका यंत्रालय के कार्य्याध्यक्षों ने संपादकों के अर्थ छापा।

रजिस्टर्ड नम्बर ३

NATIONAL LIBRARY
No. ....
Date ....
CALCUTTA

कविवचनसुधा

साप्ताहिकपत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रसखानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जियजानि १
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग। तासों आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग। २

जिल्द ५ काशी चंद्रवार आषाढ शुक्ल ७ सम्वत् १९३१ नम्बर ४७

कविवचनसुधा

चंद्रवार २० जुलाई सन् १८७४

दुःखैर्दुःखैः सतां मा भवतु रतिरिने स्याच्च मुक्तास्तधर्मी स्वायत्ता स्याल्लता राज्ञ नरतु कतौ सूर्यो मल्लर स्सु स्त्रीपुंसौ तुल्यमीशेऽवतु भवतु जनो मोदितो प्राप्यदुःखं ग्राम्योक्तिभ्यो विदूरे भवतु रुचिरलं काव्यपीयूषवृष्टिः

श्रीमती की भारतवर्षीय प्रजा राज्यप्रबन्ध में उच्चपदाधिकारी क्यों नहीं होती

उत्कृष्ट गुणशालिनी श्रीमती महाराणी की भारतवर्षीय प्रजा राज्यप्रबन्ध में कमिश्नर जज्ज वा कलेक्टर आदि उच्चपद क्यों नहीं पाती क्यों उनके लिये इंगलण्ड में सिविल सर्विस के परीक्षा की कैद की गई है यदि हम कहैं कि उनमें उक्त पदों के पाने की योग्यता नहीं तो यह बात असंभव ठहरती है क्या लक्षावधि मनुष्यों में दस पांच भी इस योग्यता के नहीं हैं जिनको ऐसी २ पदवी दी जाय हां इस बात से तो वे लाचार हैं कि भगवान् ने उनका चमड़ा गोरा नहीं किया वाह रे ईश्वर ! हिन्दुस्तानियों की लक्ष्मी अन्य देशवालों को दे श्रीमन्त से इन्हें भिक्षाटन के पात्र कर सदाशिव बना दिया पर सेव्य सेवक भाव इन से न छुटाया महेश्वर होकर भी ईश्वरता का स्वच्छन्दता का यह गुण इनमें न आया परतंत्र और सेवक ही बने रहे।

अब यहां पर विचार करना चाहिये कि उक्त पद पाने के हेतु कौन २ गुण मनुष्यों में होना उचित हैं विद्या निष्पक्षपात निर्लोभता सचाई दया इत्यादि जैसा याज्ञवल्क्यने भी लिखा है " श्रुताध्ययनसम्पन्ना धर्मज्ञाः सत्यवादिनः राज्ञा सभासदः कार्य्या रिपौ मित्रे च ये समाः " श्रुति अर्थात् मीमांसा व्याकरण आदि वा वेद का जानने वाला धर्मज्ञ धर्मशास्त्र में कुशल सत्यवक्ता शत्रु और मित्र में समदृष्टि अर्थात् रागद्वेष से रहित ऐसे को सभासद् अर्थात् न्याय दर्शक राजा को करना चाहिये प्राचीन समय में ये गुण तो इस देश के मनुष्यों में अवश्य रहे होंगे क्योंकि स्मृति ही प्रमाण है फिर चाणक्य विष्णुशर्मा आदि ऐसे २ लोग भी होगये हैं जिनके बनाए कामन्दकी आदि ग्रन्थ भी वर्त्तमान हैं जिन में राज्य प्रबन्ध का के सा उत्तम वर्णन किया गया है मुसलमानों के राज्य में भी बहुधा इस देशवाले इस विषय में बड़े कुशल होगये हैं जैसा राजा मानसिंह, टोडरमल, मह मूद गवन, शिवाजी, हैदरअली, बाजीराव, रंजीतसिंह, प्रभृति कैसे २ असामान्य बुद्धिवाले होगये हैं। भया इस पुरानी गाथा से हमें क्या प्रयोजन है वर्त्तमान समय में देखना चाहिये कि कोई इस पद पाने के योग्य हैं कि नहीं वर्त्तमान समय में भी सर सलारजंग, सर जंगबहादुर, सर राजा देवनरायण सिंह, सैय्यद अहमद खां, सर राजा दिनकरराव, राजा शिवप्रसाद, आदि कैसे २ बुद्धिमान् लोग विद्यमान हैं जिनकी बुद्धि कौशल राज्य प्रबंध के विषय में सभों को प्रगट है यदि सरकार भारतवर्षवालों को ऐसे पद देने का उद्यत हो तो कितने इस योग्यता के निकलेंगे जो रा

ज्यका कार्य्य निर्वाह बडी बुद्धिमानी से कर सक्ते हैं और विद्या निष्पक्षपात सचाई आदि पूर्वोक्त गुणों से अत्यन्त सुसम्पन्न हैं तो फिर क्या कारण है कि सरसनी निवती श्रीमती हमलोगों को अपनी कृपा कटाक्ष से अनुग्रहीत नहीं करती ऐसा करने से तो उनके राज्य की और भी स्थिरता हो सक्ती है क्यों कि जब तक प्रजाको राजाके राज्यप्रबन्ध में कुछ गम्य नहीं रहता तब तक राजा प्रजा दोनों में यथोचित प्रीति नहीं होती और परस्पर इन दोनों में प्रीति न होने से राज्य की स्थिरता नहीं हो सक्ती अकबर इत्यादि राजा इस के दृष्टान्त भी हैं जिनके राज्य की स्थिरता का मुख्य कारण यही था कि अकबर हिन्दू मुसलमान दोनों को राज्य प्रबन्ध के सब अधिकार बराबर से देता था इसके प्रतिकूल जब औरंगज़ेब ने हिन्दुओं को उच्चपद देना बन्द कर दिया तब उस्के राज्य की जो दुर्दशा हुई व इतिहासों से प्रगट है सन् १८५८ में जब यह देश कम्पनी के हाथ से छुट श्रीमती के हस्तगत हुआ था उस समय महाराणी ने कहा था कि मैं इंग्लिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों पर समदृष्टि रक्खोंगी यह बात केवल बुद्धिस्त थी वा उसका कुछ परिणाम भी होना चाहिये फिर भारतवर्ष जिसेवे अपनें मुकुट का एक अति दीप्तिमान मणि समझती है उस्के लिये क्या बड़ा उपकार उन्होंने किया ऐसी परम कारुणिक और दयालु सरकार को यह भी हम नहीं कह सक्ते कि वह न चाहतीं हों कि भारतखण्ड की सम्पत्ति जो कुछ बच रही है वह भी हमलोगों के मन्द भारब्ध के कारण न रहने पावे और उन उच्च पदों का दान हमें न करैं जिस्से इस देश वाले भी प्रति मास में दो सहस्र तीन सहस्र मुद्रा वेतन पाने के अधिकारी हों और लाखों रुपये जो प्रतिवर्ष एक २ अदना हाकिम यहां से अपने जाने के समय विलायत ले जाते हैं उस्का कुछ भाग यहांही रह जावे यदि सरकार को इस देश में उन्हें ऐसे २ पद देने से कुछ विचार वा भय हो तो भारतवर्ष को छोड कर अपने राज्य के और स्थानों में इन्हें क्यों ऐसे पद नहीं देती ॥

खिताबका भाव बहुत उतरैगा

बंगाल में काल पडा है इस्से इस्के समाप्त होने पर खिताब का भाव निसन्देह बहुत सस्ता हो जायगा यहां तक कि टके सेर तक बिकै तो आश्चर्य नहीं हम ग्राहकों को समाचार देते हैं कि ये प्रस्तुत हो रहे हैं केवल थोडा सा कागज़ रंगने और झूठी मीठी रिपोर्ट कर देने पर खिताब मिल जायगा पर ढंगबाजी शर्त्त है रायबहादुर राजा नौव्वाब स्टार सब बज़ार में आवैंगे गांहक लोग मियानी खोल रक्खैं ॥

आनरेरी मैजिस्ट्रेट

हम लोगों ने सुना है कि यहां कुछ आनरेरी मैजिस्ट्रेट और नियत होंगे यदि ऐसा हो तो राव वेणीराम, और बाबू केशवराम, इन दोनों योग्य और आदरणीय पुरुषों की नियोजना की हम लोग भी आशा करते हैं।

छल

सरकार अंग्रेज़ी के राज्य में ऐसी बात कम सुनी गई थी परन्तु अब इसी एक महीने के बीच दो बडे २ छल कर्म हुए एक यह कि सन् १८७० ई॰ के बीच साठ हजार के स्टाम्प कलकत्ते से गाज़ीपूर के खज़ाने में आए थे वे हिसाब में लिखे नहीं गए अब वह भेद खुला पाइनियर के लेख से जान पडता है कि कई अंग्रेजी लिखने वाले हिसाब न देने के कारण चौदह २ वर्ष के लिये कारागार में भेजे गये और एक पदच्युत कियागया परन्तु एक और स्थान से ज्ञात हुआ कि हिसाब के कागज़ों के खोजाने के कारण अपराधी का शोध नहीं लगता हिसाब में दाखिल करना क्यौं कर सिद्ध हुआ दूसरे यह अपराध उस अपराध से बहुत छोटा है जो ऐसे छल से अपहरण किया जाय कि जिस्का कोई उत्तर न हो। इलाहाबाद में साहब रजिस्ट्रार जनरल और कमिश्नर स्टाम्प के कार्यालय में ग्यारह हजार रुपये का अपहरण हुआ और जिस साहब से यह छल कर्म हुआ वह वहां के कार्यालय में मुख्य था न्याय होने के समय उन्होंने अपराध का स्वीकार किया और तीन वर्ष के लिये कारागार में भेजा गया यह साहब बड़ कुटुंबी है और ऐसा ऋण ग्रस्त है कि सारी सम्पत्ति हज़ारों रुपये के ऋण में बन्धक है देखना चाहिये कि सरकार के दावे का क्या होता है प्रत्येक धनी अपने ऋण के सोच में हैं और कार्य्याध्यक्ष तक उस्के कुटुम्ब की दशा पर खेद करते हैं यह भी एक प्रकार की विक्षिप्तता थी जिसने इसको अपराध कराया यह साढे चार सौ रुपये मासिक पाता था तिस पर यह कर्म किया। बु॰

समाचारावली

— रेव॰ मि॰ नारायण शेषाद्रि ने अपने यूरप और अमेरिका के यात्रा का सविस्तर वर्णन फ्री जनरल असेंब्ली हूस में किया।

अनन मेगजी नामक पचीस वर्ष के ब्राह्मणने एक आठ वर्ष के बालिका से बलात्कार किया वह बालिका उसके पास पडोसी जान कर दियासलाई लेने गई थी अब वह बाटली वाले के औषधालय में है और वह नीच कारागार में भेजा गया।

अयोध्या-प्रान्त के कारागार में सन् १८७३ में सब मिलाकर चौदह हजार तीन सौ तीस कैदी थे।

कचार-प्रान्त में सब मिला कर दो लाख छप्पन हजार एक सौ चार एकर जमीन में चाह बोई थी।

काठियावाड-के हलार प्रान्त में पांच मनुष्य बिज्जुपात होने से मरे।

सेन्ट पीटर्सवर्ग में प्रोफेसर राथ लिंग संस्कृत कोश छाप रहे हैं।

सूरत– तापी नदी पर पुल वर्षाऋतु के अनन्तर बनना आरम्भ होगा इस काम का प्रारंभ गवर्नर साहब करेंगे।

रंगने का यंत्र– मि॰ डब्ल्यू॰ जे॰ एडिस सिविल इंजीनियर ने रेशम सूत कपडा आदि रंगने के निमित्त एक नवीन यंत्र निकाला है इससे कपडा बहुत जलदी रंगा जाता है।

गत जून मास में बिलायत से ओन्नीस करोड सैंतीस लाख पचास हजार रुपये का माल बाहर गया और-चौंतीस करोड बारह लाख पचास हजार रुपये का माल बाहर से बिलायत में आया।

चीनी लोगोंने तोफ और अनेक प्रकार के शस्त्र बनवाये हैं और जहाज पर से युद्ध करने के निमित्त कई जहाज बनवाये हैं।

गत वर्ष में ब्रटिश बर्मा प्रदेश में हिन्सक पशु मारने के निमित्त दो हजार पांच सौ पच्छत्तर रुपये पारितोषिक दिये गये सब मिला कर दो सौ अठारह हिन्सक पशु मारे गये उन में एकतालीस बडे बाघ छत्तीस उनके बच्चे तेंहतीस बडे चीते चार उनके बच्चे तेरह बडे भालू आठ उनके बच्चे और तेंहतीस बडे सूअर और पचास उनके बच्चे थे।

दिल्ली के-म्यूनी सिप्यालिटी ने नगर भर में जल यंत्र लगाने के निमित्त साढे पांच लाख रुपये सरकार से ऋण मांगे हैं इस कार्य के निमित्त अनुमान आठ लाख रुपये लगेंगे।

गया– एक मनुष्य के गृह में एक बकरी का बच्चा-विलक्षण पैदा हुआ जिस का माथा एक हाथ पैर चार २ और पुच्छ दो हैं परन्तु एक घंटे के अनन्तर मर गया उसने उसे एक चर्मकार को दे दिया उसने उसकी अतडी निकाल रख दी है जो कोई देखने जाता है प्रति मनुष्य से एक पैसा ले कर दिखलाता है उस विचारे की एक जीविका हो गई॥ वि॰

आग बुझाने की कल बिलायत में बनी है आगरे में-एक डाक्तर साहब के यहां आई है इससे आग बहुत ही शीघ्र बुत जाती है इसका मूल्य केवल पौने दो सौ रुपये हैं सरकार को उचित है कि इसे प्रत्येक पुलीस स्टेशन पर रक्खै।

समय विनोद में एक विलक्षण समाचार लिखा है-कि ग्राम एली प्रान्त इटावे में दिन के चार बजे से पांच बजे तक मांस और रुधिर की वर्षा हुई चार सौ बीघा ज़मीन में यह उपद्रव हुवा था

सेन्ट लुई रीपब्लिकन नामक समाचार पत्र से ज्ञात-होता है अमेरिका में एक प्राचीन नगर और राजगृह-का कुछ दिन पूर्व शोध लगा है यह नगर गिला नदी के तट पर है राजगृह बहुत बडा है प्रायः उस में पत्थर का काम बना है उस में एक सूर्य की मूर्त्ति कुछ तांबे के शस्त्र सुवर्ण के आभूषण ऐसे ही कई दूसरे पदार्थ मिले हैं इस बहत घर का शोध अभी भली भांति नहीं हुआ है परन्तु यह गृह सहस्र वर्ष पूर्व का बना हुवा और इसके बनाने वाले बडे बुद्धिमान् ज्ञात होते हैं।

दो महीने से रूसियों के इंजीनियर हाम्लन दी-को नाप रहे हैं और स्यान चारज से हिरात तक-एक सडक बनवाई है जिस पर दो हज़ार मज़दूर काम करते हैं और एक दूसरी सडक मेम्मा तक बन रही है तीसरी सडक बुखारा से मशहद तक बनती है।

चीन देश का एक दरजी विलायती कल से कपडा सीने लगा सो उसके भाई बन्दों ने उसे जाति से निकाल दिया।

बम्बई-नार्थ ब्रूक गार्डन यह बाग शीघ्र ही तैय्यार हो जायगा।

प्रेरितपत्र

जो पत्र इन स्तम्भो में प्रकाश होते हैं हम उनके उत्तरदाता नहीं हो सक्ते

श्रीमान् क·व·न·सु·सं· मीपेषु॥

आपके गत नम्बर में स्त्री शिक्षा का परिणाम नामका जो प्रेरित पत्र छपा था उसको देखकर हम को बड़ाही खेद हुआ कि इस समय जबकि अनेक अविवेकी अज्ञानी अपने मूर्खता से सर्वदा स्त्री शिक्षा में बाध करने में प्रस्तुत हैं इस दशा में इस प्रकार के अप्रबंध का होना अत्यन्त हानिकारक है क्या कारण है कि प्रबन्ध कर्त्ता इस विषय में चित्त नहीं देते यह बड़े लज्जा की बात है शिक्षा भले गुण के सम्पादन के निमित्त दी जाती है न कि अनुचित व्यवहार के लिये हमको इसका हेतु यही ज्ञात होता है कि इनके पढ़ाने वाली योग्य नहीं हैं इसी से यह आपत्ति प्रस्तुत है क्या शिक्षा का अर्थ केवल अक्षरों का ज्ञान करा देना ही है और उनके चाल चलन की ओर कुछ न देखना प्रथम उनके चाल चलन सुधारने की शिक्षा होनी चाहिये क्योंकि मूर्ख स्त्रियों के व्यवहार देखकर सभों के चित्त उसी प्रकार हुए हैं एतदर्थ उनके पढ़ाने वाली पण्डिता और योग्य होनी चाहिये यदि उन की ही चाल चलन अच्छी न होगी तो वे दूसरों की शिक्षा क्या करेंगी इसलिये कार्य्याध्यक्षों को उचित है कि जहां तक हो सके गुणवान् शीलवती स्त्रियां इनके शिक्षा के निमित्त रक्खी जांय जिस्से हम लोगों की अभिलाषा शीघ्र पूर्ण हो क्योंकि इस देश के स्त्रियों की मूर्खता देखकर बड़ा खेद होता है कि ये अन्य देशों के समान शिक्षित नहीं हैं॥

आपका एक ग्राहक

विज्ञापनपत्र

एक समाचार सब को विदित होय कि एक आर्य्यविद्यालय काशीजी में सम्वत् १९३० पौषमास में केदारघाट पर जिसका आरम्भ हुआ था वही अब त्रिपुरभैरवी महल्ले मिश्र दुर्गाप्रसाद के स्थान में सम्वत् १९३१ मि· आषाढ़ शु· ५ शुक्रवार प्रातःकाल ७ बजे से उपरान्त आरंभ होगा। इसका प्रबन्ध अब अच्छे प्रकार होगा प्रातः ७ बजे से पठन और पाठन होगा १० वा ११ बजे तक। फिर एक बजे से पांच बजे तक। इस में अध्यापक गणेश श्रोत्री जी रहैंगे, सो पूर्व मीमांसा वैशेषिक, न्याय, पातञ्जल, साङ्ख्य, और वेदान्त दर्शन, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतिरीय, छान्दोग्य, और बृहदारण्यक, दश उपनिषद्, मनुस्मृति, कात्यायन और पारस्कर कृत गृह्यसूत्र, इनको पढ़ाया जायगा। थोड़े समय के पीछे चार वेद, और चार उपवेद तथा ज्योतिष भी पढ़ाये जांयगे। और एक वैयाकरण रहेगा। वह अष्टाध्यायी धातुपाठ, उणादि, गण, शिक्षा और प्रातिपदिकगणपाठ, ये पांच पाणिनि मुनिकृत और पतञ्जलि मुनिकृत महाभाष्य, पिङ्गल मुनि कृत छन्दोग्रन्थ यास्क मुनिकृत निरुक्त निघंट, और काव्यालंकार, सूत्र भाष्य, इन सबका पढ़ना होगा। जिन की पढ़ने की इच्छा होय सो आके पढ़ैं जो विद्या और श्रेष्ठाचार की परीक्षा में उत्तम होगा, उसकी परीक्षा के पीछे पारितोषिक यथायोग्य मिलेगा सो परीक्षा मास २ में होगी- इसमें ब्राह्मण क्षत्रिय, और वैश्य सब पढ़ैंगे, वेदपर्य्यन्त, और शूद्र मन्त्र भाग को छोड़ के सब शास्त्र को पढ़ें। फिर जब २ इस आर्य्य विद्यालय के लिये अधिक चन्दा होगा। तब २ अध्यापक और विद्यार्थी लोगों को भी पढ़ाया जायगा, इसकी रक्षा के लिये और वृद्धि के एक आर्य्य सभा संस्थापित हुई है, और एक आर्य्य प्रकाश पत्र भी निकलेगा मास २ में इन तीन बातों की प्रवृत्ति के वास्ते बहुत भद्र लोग प्रवृत्त हुए हैं और बहुत प्रवृत्त होंगे इस्से ही आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति होगी इस विद्यालय में यथावत् शिक्षा भी होगी जिस्से कि सब उत्तम व्यवहार युक्त होंय।

सम्मतिरत्र दयानन्दसरस्वतिस्वामिनः

कविवचनसुधा वा मैगजीन की पृथक् न्योछावर

अग्रिम ६) वार्षिक है, और पीछे देने से ७) देना होगा परन्तु जो दोनों पत्र लेंगे उनको अग्रिम केवल १०) रु· और पीछे १२) रु· देना होगा और महसूल २) रु· अलग है तथा क·व·सुधा एक प्रति का =) और मैगजीन के प्रति कापी का ।।) मूल्य है और इश्तिहार का प्रति पङ्क्ति =) है विशेष पूछने से ज्ञात होगा॥

बनारस में श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका यन्त्रालय के कार्य्याध्यक्ष ने सम्पादकों के अर्थ छापा॥

रजिस्टर्ड नम्बर ३

NATIONAL LIBRARY
No. ...
Date ...
CALCUTTA
331 em

कविवचनसुधा

साप्ताहिक पत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रस खानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जिय जानि १
सुधा सदा सुर पुर बसै सो नहिं तुह्मरे जोग। तासों आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग २

जिल्द ५ काशी चन्द्रवार आषाढ शु॰ १३ सम्वत् १९३१ नम्बर ४८

कविवचनसुधा
चन्द्रवार २७ जुलाई सन् १८७४

दुःखैर्दुष्टैः सतां मा भवतु रतिरिने स्याच्च मुक्तास्य धर्मा
स्वायत्ता स्यात्प्रजा राड्डत करतु कृती स्वरयो मत्सरः खुः।
स्त्री पुंसौ तुल्यमीशो वतु भवतु जनो मोदितोऽप्राप्य दुःख
ग्राम्योक्तिभ्यो विदूरे भवतु रुचिरलं काव्यपीयूषवृष्टिः

ऐङ्ग्लोसँस्कृत

यद्यपि यह हम लोगों में अब एक साधारण अपवाद प्रचलित है कि बड़े २ कालिजों में अब पढाई इतनी कठिन और कुब्यौंत होती है कि वहां के पढ़े हुए लड़के किसी काम के नहीं निकलते और अगली पढ़ाई के इन्ट्रेंसपास किए हुए लोगों की योग्यता अब के एम॰ए॰ बीए॰ नहीं पाते परन्तु हमारे बनारस कालिज के ऐङ्ग्लो सँस्कृत वर्ग के विषय में तो हमैं बहुत कुछ कहना है — यह बात बुद्धिमान सहज में कहेगा कि नए चित्त पर जितनी बातें कोमलता से खचित होंगी उतनी कठिनता से न होंगी तो आगे कालिजों में बालकों को शीक्षा ऐसे कोमल रीति की होती थी कि वे जो कुछ पढ़ते थे उन के चित्त पर खचित और स्मृति में पूरा अभ्यसित हो जाता था पर अब उस के विरुद्ध अरबी सँस्कृत लॉजिक फ़िलासफ़ी इत्यादि कठिन विषय छोटे ही क्लासों से आरम्भ होते हैं जिस से उस्के समझने की योग्यता न पाकर वह तो आताही नहीं उस के साथ ही उन विषयों में चित्त व्यय होने से और भी रहा सहा पढ़ा लिखा भूल जाते हैं एक पङ्क्ति न अंग्रेजी लिख सकैं और न एक वाक्य किसी सभा में शुद्ध बोल सकैं और उसके साथ जो सँस्कृत या अरबी पढ़ी थी वह तो मानो पूर्वजन्म का पाठ था इस जन्म में जो कोई पूछे तो कुमार संभव के पहिले सर्ग का एक श्लोक पढके अपने सँस्कृत का परिचय देंगे पर यदि सहज ही सँस्कृत में उन्हे कुछ कहो तो हक्के बक्के बन कर मुंह देखने लगेंगे - इस शिक्षा प्रनाली में कालिज के अध्यक्षों का दोष कुछ नहीं है क्यौं कि अब कोर्स (पाठ) नियत करना यूनिवर्सिटी के आधीन है और यूनिवर्सिटी की परीक्षा जैसी होने वाली होती है प्रिन्सिपल लोग कोर्स को भी उसी के अनुसार कर देते हैं और यूनिवर्सिटी के परीक्षक अपनी सब योग्यता बालकों की परीक्षा ही मे व्यय कर देते हैं जिस्से सब परम्परा बिगड कर केवल यह झूठा अपवाद मात्र हाथ लगता है कि सरकार अब लोगों को पढ़ाया ही नहीं चाहती और सरकार बिचारी का व्यय दिन २ बढ़ताही है कुछ घटा नहीं पर वही कहावत हुई बकरी जान से गई खाने वाले को स्वाद न मिला।

परन्तु ऐङ्ग्लो सँस्कृत (अर्थात् अंग्रेजी और सँस्कृत साथ पढ़ने वाले) वर्ग की दशा सब वर्गों से हीन है

क्योंकि यहाँ के पढ़े लोग ठीक ऐसे ही हैं कि दोनो दीन से गए पाण्डे, हलुआ भए न मांडे न तो उन्हें संस्कृत आती है न अंग्रेजी — क्योंकि इस वर्ग के पूरे पढ़े हुए लोगों को जो पारितोषिक वेतनादि पाते हैं बरंच पाठकों को भी अंग्रेजी बोलने और लिखने नहीं आता यद्यपि वे समझ लेने में इतने मुग्ध नहीं हैं और उनके संस्कृत जानने का केवल इतनाही कारण है कि वे संस्कृत अलग पढ़ते हैं और कुछ पहिले के भी पढ़े रहते हैं यदि कोई संस्कृत का अनपढ़ केवल कुछ अंग्रेजी जानने वाला वहाँ भरती होतो संस्कृत में उसकी वही दशा होगी — इसमें कई कारण हैं प्रथम तो इस वर्ग में क्लास बहुत थोड़े हैं जिससे पाठ की प्रनाली अच्छी नहीं बंधती दूसरे पाठकगण तादृश योग्य नहीं हैं क्योंकि इस के सब पाठक दोनों विद्याओं के पारंगत होने चाहिये तीसरे इस में पढते २ आगे कोई पद नियत नहीं है जिस तक पहुंचके वे इस के पारंगत समझे जांय — चौथे इस वर्ग के हेतु व्यय बहुत थोड़ा है इसी से न तो बड़े योग्य लोग छोटे क्लासों के हेतु मिलते हैं न क्लास बढ़ सक्ते हैं पांचवें — इस में साधारण काव्यादिक न पढ़ाकर फ़िलासफ़ी लाजिक इत्यादि कठिन विषय पढ़ाए जाते हैं जिन से बोलने वा लिखने की शक्ति नहीं बढ़ती तो इस दशा में लोकल गवर्मेन्ट को इस विषय पर ध्यान देना अवश्य चाहिये क्योंकि मुद्रा व्यय करके भी यदि कुछ सिद्धि न हो तो व्यर्थ अज्ञ बनना पड़ता है और जो कहो कि जैसा डा॰ बालन्टाइन साहेब ने सोचा था कि इस वर्ग से केवल इतना लाभ है कि पण्डित लोग केवल अङ्ग्रेजी न्याय जाने तो डाक्टर साहब का वह सोचना अब किसी अंश में भी गुणदायक न होगा क्योंकि अब उसकी जैसी स्थिति है वा अब जैसे लोग उस में पढते हैं वे उस काम के नहीं और न इस विद्या से उन के चित्त में किसी मत विषयक कुछ विचार उत्पन्न होने की आशा है।

गुप्तसंदेश

अवसर पाकर हम लोगों को यह बात फिर कहनी पड़ी क्योंकि जब यह विषय लिखा गया तब किसी एक प्रतिष्ठित मनुष्य ने इस विषय को अपने ऊपर जटित करके इसका ऐसा पचड़ा और चबाव किया कि हमको भी यही कहते बन पड़ा कि हाँ यह उन्हीं पर था बरंच उसका परिहार भी छापना पड़ा क्योंकि वह ऐसाही काल था हमने भी सोचा कि इस समय ऐसी चौबाई वही है कि तुम्हारा सत्य कहना न काम आवेगा लोग समझैंगे कि हम उस से अब बहाने से जी छिपाते और बात बनाते हैं हमने भी हाँ हाँ कर दिया पर अब मैं उन सच्चे सन्देश वाले को फिर से चिताता हूँ कि आपके भाग्य से वह बात उड़ गई थी अब आप सोचिये और विश्राम जानिये कि वह आपही को कहा गया था क्योंकि जिस्मे विशेष हमें न कहना पड़े कारण इतना ही है कि आप का नष्ट होना किसी विशेष व्यक्ति का नष्ट होना नहीं है किन्तु एक समाज का नष्ट होना है कारण यह कि बम्बई के 'महाराजालाइबल केस,' में दोष एक दो पर ठहराया गया पर उस के कारण इस मत मात्र की लोग हँसी करते हैं यही दशा आपकी है चन्द्रमा में जहाँ सौ गुण हैं वहीं कलंक भला लगता है पर कलंक ही कलङ्क हो तो क्या अच्छा लगै यह हमी लोग नहीं कहते किन्तु सब कहते हैं अभी यह गोल बात है आप समझ जाइये क्योंकि हिन्दुओं में आप दूसरे के उपदेष्टा हैं जब मंदिर ही में नास्तिकपन घुसेगा तो फिर शरण कहाँ मिलेगी हिन्दू तो सब भाँति दबे ही जाते हैं सो आप लोग और भी उन्नति के बदले उन्हें क्यों दबाए देते हैं।

गर्भस्तुति

काशी से संस्कृत और भाषा का एक मासिक पत्र "स्मेर सरस्वती" नामक आजही कल में निकलने वाला है और श्री पण्डित बालशास्त्री, पण्डित दुण्ढिराजशास्त्री, बाबू प्रमोदादासमित्र, इत्यादि बहुत अच्छे २ लोग इस के संपादक हैं इसमें क्या सन्देह है कि जितने विद्या विषय पत्र प्रचलित हों उतना ही आनंद का विषय है परन्तु मनुष्य जो कुछ करै उसका फल और परिणाम अवश्य सोचे इसबेर उस पत्र में शङ्कर भाष्य की टीका और विदुरनीति ये दो विषय सन्निवेशित हैं — तो अब हमारा यह प्रश्न है कि शंकर भाष्य छापने से क्या लाभ होगा? यदि कहो कि एक प्रकार की फ़िलॉसफ़ी (शास्त्रीय विषय) लोग जानेंगे तो शांकर फिलॉसफी ऐसी प्रसिद्ध और सहज हो रही है कि आपामर उसको जानते हैं सिखाने का कुछ काम नहीं इसे छोड़ कर अवसर सब स्थान में देखना पड़ता है तो यह अवसर वेदान्त बूकने का नहीं किन्तु व्यायाम, युद्ध, शिल्प, वाणिज्य शारीरक इत्यादि आवश्यक शास्त्रों को सीखकर आगे बढ़ना कौन कहे और देश के लोगों के मार्ग पर चलने का है अहम्ब्रह्म कहने से कुछ काम न चलेगा अहंदीनः अहंहीनः समझने का अवसर है।

समाचारावली

प्यारिस में एक परम रूपवती युवती एक प्रसिद्ध वकील के पास जाकर अपने मुकद्दमें को कहने लगी वकील उसके रूप यौवन को देख कर मोहित हो गया कहने लगा कि एक पत्र हम तुम को लिख कर देते हैं उस्को तुम कण्ठ कर के उस दिन न्यायाधीश के सामने पढ़ना उसने उस युवती को लिख दिया और भली भांति समझा दिया उस स्त्री ने नियत दिन पर न्यायाधीश के सामने पढ़ा उसका रूप और वक्तृता देख कर न्यायाधीश का चित्त पिघल गया वक्तृता के समाप्त होने के पूर्व ही प्रतिवादी पर डिगरी कर दिया इस दृष्टान्त से सिद्ध है कि स्त्रियों के ब्यारिष्टर होने में कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

इंगलण्ड में छः स्त्रियाँ ब्यारिष्टर के परीक्षा के निमित्त श्रम कर रही हैं पुरुष ब्यारिष्टरों को यह उपाय करना चाहिये कि जिस्से स्त्री लोग विचार पती हों क्यौं कि जिस प्रकार पुरुष न्यायाधीश केवल स्त्रियों के सुंदरता पर मोहित हो कर डिगरी कर देते हैं उसी प्रकार जब स्त्रियाँ न्यायाधीश होंगी तब सुंदर पुरुष के ऊपर वे भी मोहित होजांयगी

— प्रिन्स बिस्मार्क दिन २ लोगों के निकट अप्रिय होते जाते हैं प्रथम इन को एक मनुष्य ने मार डालने का उद्योग किया था और सम्प्रति भी एक मनुष्य ने उन को गोली मारा पर ईश्वर की कृपा से वह गोली उन के हाथ में किंचित लगी वह दुष्ट पकड़ा गया।

— लण्डन–की वर्त्तमान लोग संख्या तेंहतीस लाख से कुछ ऊपर है अर्थात् कलकत्ते से अठगुनी अधिक है और वहाँ का परिणाम फल एक सौ बाईस वर्ग मील है और वर्ष में बीस करोड़ रुपये की सम्पत्ति के ऊपर कर लगता है, गत वर्ष में यहाँ प्रति सप्ताह में दो हज़ार दो सौ पचासी मनुष्य जन्मे और एक हजार चार सौ छियालीस का मृत्यु हुआ जन्म संख्या आठ सौ उंचालीस अधिक है।

अमेरिका–में एक सौ बीस करोड़ रुपये प्रतिवर्ष में मद्य के निमित्त व्यय होते हैं।

काश्मीर–के महाराज चीन में एक रेशम की कोठी करने वाले हैं और एक देशी युवा को उस कोठी का कार्याध्यक्ष नीयत करने की इच्छा प्रगट किया है

एक कोठी वाले साहेब ने अपने नौकर का कान पकड़ कर ऐसे जोर से पींचा कि कान से रुधिर की धारा बहने लगी।

प्रेरितपत्र

जो पत्र इन स्तम्भों में प्रकाश होते हैं हम उन के उत्तर दाता नहीं हो सक्ते

श्रीमान् क॰ व॰ न॰ सु॰ सं॰ समीपेषु।

एक दयानन्द सरस्वती नामक संन्यासी दिगम्बर बिचरते रहते हैं, सत्पुरुष और सत शास्त्रों के वैरी हैं कहीं बिचरते २ आगरा नगर में पहुंचे और सुना जाता है कि आजकल वहीं हैं भरत खण्ड मृत के सम्पादक ने अपने समाचार पत्र भरत खण्ड मृत नम्बर २३ ता॰ १ जुलाई पृष्ठ २०४ में कुछ दयानन्द का उपहास लिखा है और कोई प्रमाण वेद या स्मृति का नहीं लिखा इस्से उक्त महाशय की योग्यता और पाण्डित्यता प्रगट होती है और ज्ञात होता है कि वे वेद और स्मृति नहीं जानते और यह भी नहीं जानते कि ये ग्रन्थ हिन्दुओं के मत सम्बन्धी ग्रन्थ हैं वा मुसलमान और ईसाइयों के हैं जो कदापि जानते होते तो दयानन्द सरस्वती को ऐसा न लिखते यह वे दयानन्द सरस्वती हैं कि जिसने हरिद्वार से कान्हपूर तक विशेष कर सोरों कासगंज फ़र्रुखाबाद आदि नगरों में सैकड़ों ब्राह्मण क्षत्री और वैश्यों के बालकों को यज्ञोपवीत पहरा दिये और गायत्री सन्ध्योपासन बलि वैश्वदेव, दशाहुति, और वेदाध्ययन करना जो पञ्च महायज्ञ ब्राह्मणों का मुख्य धर्म मनुस्मृति में लिखा है, सिखा दिया और पापों के निवारणार्थ प्रायश्चित्तों के करने में तत्पर कर दिया वेदों के पढ़ाने के अर्थ संस्कृत पाठशाला नियत कराई क्या यह सब बातें मुसलमानों और ईसाइयों के मत से सम्बन्ध रखती हैं और इन धर्मों में तत्पर होने वाले और कराने वाले को मुसलमान और ईसाई कहेंगे और क्या यह बातें मूर्खता का कारण हैं, तो व्यासजी और मनुजी भी मुसलमान होंगे वाहरे बुद्धि, आशा है कि कोई हिन्दू मात्र जिस को कुछ भी बुद्धि होगी ऐसा न कहेगा जैसा उक्त सम्पादक ने लिखा है उक्त महाशय ने मूर्त्ति पूजन के विधान में क्या अच्छा नक्शा वा चित्र का दृष्टान्त दिया है "शायद" यह प्रमाण उन के किसी ग्रंथित किये हुए वेद में होगा मनुस्मृति में चित्र का खण्डन है और इसके बनाने वाले को पापी लिखा है उस श्लोक को हम नीचे लिखते हैं और ह

मारे इस अर्थ की सचौटी के लिये मनुस्मृति कुल्लुक भट्ट के टीका सहित जो काशी में मुद्रित हुई है देखलें श्लोक। शिल्पेन व्यवहारेण शूद्रापत्यैश्च केवलै। गोभिरश्वैश्च यानैश्च कृष्या राज्योपसेवया ॥१॥ अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्म्मणा। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानिहीनानिमंत्रितः॥ २॥ जो चित्रकारी करना बुरा है तो देवता की मूर्त्ति बना कर पूजने में महापाप है। शहरों का नकशा बिना देखे अंग्रेजों ने नहीं बनाया प्रथम उन्होंने उन देशों नगरों आदि को अच्छी तरह नेत्रों से देख लिया पश्चात् नकशा देश नगरों आदि का बनाया, जब अमेरिका देश यूरोप वालों को नहीं मालूम था उस समय इसका नकशा नहीं था—कलम्बस नामी मनुष्य ने ढूंढ़ लिया पश्चात् उसका नकशा बना और आफ्रीका देश के मध्य का हाल अङ्गरेजों को नहीं मालूम है तो उसका नकशा भी नहीं है जैसे। चित्रकार बिना किसी मनुष्य स्वरूप देखे चित्र नहीं बन सक्ता यदि ऐसा संभव हो तो जिस मनुष्य का नाम लिख भेजूं तो सम्पादक साहब उसका चित्र बनवा कर भेज देंगे वा नहीं उसी तरह से जब उस परब्रह्म परमात्मा निराकार का किसी को स्वरूप नहीं मालूम और न किसीने उसको देखा है तो कैसे संभव है कि उनका चित्र सही २ बना सकै जो कदाचित् इसका उत्तर यह दें कि प्रथम किसी महात्मा वा ऋषीने ब्रह्म को देख लिया है और उसका स्वरूप लिख दिया है, उन्होंने मूर्त्ति बनवा दी थी तो उस ऋषी का नाम सहित वेद वा स्मृति में लिखा बतावें परन्तु वेदों में ब्रह्म को निराकार और अस्वरूपवान् लिखा है और जो यह बात सत्य भी हो कि किसीने उसका स्वरूप देखकर मूर्त्ति बनाई, तो उस ऋषी के उत्पन्न होने से पहिले क्या ब्रह्म का स्वरूप था और हमारा क्या मत था। इस वार्त्ता से भी यही सिद्ध होता है कि उन से पहिले मूर्त्तिपूजन न होगा।

हम यहां पर दूसरा प्रमाण उसी ग्रन्थ का देते हैं—जो निश्चय न हो ग्रन्थ में देख लो। श्लोक चिकित्सकान्देवलकान्मांसविक्रयिणस्तथा विपणेन च जीवन्तो वर्ज्याः स्युर्हव्यकव्ययोः देवलकान अर्थात् मूर्त्तिपूजन करने वाला पतित होता है, इसकारण उसका दिया हुआ हव्य कव्य देव पितर नहीं पाते, जो ब्राह्मण मूर्त्ति पूजन करने के कारण पतित हुआ तो मूर्त्ति पूजन का निषेध पाया गया, जो देवलक शब्द का अर्थ मूर्त्ति पूजन करने वाला न हो तो कुल्लुक भट्ट का टीका अथवा कोश आदि देखलें उससे निश्चय हो जायगा, मनुस्मृति में जहां ब्राह्मणों के धर्म्म कहे हैं वहां मूर्त्ति पूजन का विधान नहीं किया जो इसका निषेध न होता तो मनुजी अवश्य मूर्त्ति पूजन को छटा यज्ञ ब्राह्मणों के पञ्च महायज्ञ में "शामिल" कर देते। अब हम और प्रमाण भागवत का देते हैं। श्लोक यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः। इति भागवते दशमस्कन्धे वसुदेव नारद संवादे

तथाच तृतीयस्कन्धे कपिलोपाख्याने देवहूतीम्प्रति कपिलवचनम्। योमां सर्वभूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्। हित्वार्चां भजते मौढ्याद्भस्मन्येव जुहोति सः। नह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः। ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः॥ विस्तार होने के कारण इन श्लोकों का अर्थ नहीं लिखा, उक्त महाशय समझलें जब इन ग्रन्थों में भी पाषाणमय देवताओं के पूजन का निषेध है तो क्या इस ग्रन्थ के कर्त्ता मुसलमान थे बरन इसके विरुद्धों को ऐसा कहा जाय तो उचित है। इति

एस मि·आ शु·३ | आप का एक शुभचिन्तक निर्पक्षन्यायकर्त्ता सद्धर्म वेत्ता।

काशी

सकल्डीहा स्टेशन पर दो माल गाडी लड़ गई है ईश्वर की कृपासे सभों के प्राण बचे केवल चार गाडी टूट गई यहाँसे असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट तहकीकात को गए थे।

आजकल इहाँ डोमडे बहुत उन्मत्त हुए हैं जब किसी को शून्य स्थान में देखते हैं उनका वस्त्र मोचन कर लेते हैं पुलीस को उचित है कि सावधान होकर इसका शीघ्र प्रबंध करे

कविवचनसुधा वा मैगजीन की पृथक् न्योछावर

अग्रिम ६) वार्षिक है, और पीछे देने से ७) देना होगा—परन्तु जो दोनों पत्र लेंगे उनको अग्रिम केवल १०) रु· और पीछे १२) रु· देना होगा और महसूल ३) रु· अलग है तथा क·व·सुधा एक प्रति का =) और मैगजीन के प्रति कापी का ।।) मूल्य है और इश्तिहार का प्रति पङ्क्ति =) है विशेष पूछने से ज्ञात होगा।

बनारस में श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका यन्त्रालय के कार्य्याध्यक्षों ने सम्पादकों के अर्थ छापा।

रजिस्टर्ड नम्बर

NATIONAL LIBRARY
No. ....
Date ....
CALCUTTA

कविवचनसुधा

साप्ताहिक पत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रस खानि । पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जिय जानि ॥
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग । यासों आदर देइ अरु पिअहु याहि बुध लोग ॥ १ ॥

जिल्द ५ | काशी चन्द्रवार श्रा० शु० १२ सम्वत् १९३१ | नम्बर ५०

कविवचनसुधा

चन्द्रवार १० अगस्त सन् १८७४

दुःखं दुष्टैः सतां मा भवतु रविरिव स्यात्त मुक्तास्य धर्मे स्वायत्तास्यात्प्रजा राज्ञक करतु कली सत्यो मतारः स्सुर स्त्री पुंसौ तुल्यमीशो वतु भवतु जनो मोदितोप्राप्य दुःखं ग्राम्योक्तिभ्यो विदूरं भवतु रुचिर रसं काव्य पीयूष वर्षि ॥

गुरु कैसे होने चाहिएँ

श्रुति- तद्विज्ञानार्थं सगुरु मेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं । तस्मै सविद्वान् उपसन्नाय सम्यक् प्रशान्त चित्ताय शमान्विताय । येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्यां ॥ पुराण- तस्माद्गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम् । शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयं ॥ स्मृति- शुद्ध सत्त्व गुणोपेतं नवेज्या कर्म कारकम् । सत्सम्प्रदाय संयुक्तं मन्त्ररत्नार्थ कोविदम् । ज्ञानवैराग्य सम्पन्नं वेद वेदाङ्ग पारग ॥ प्रसिताचार सदाचारं सर्वधर्म विदाम्वरम् ॥ (गुरुमिति शेषः) इत्यादि शास्त्र के वाक्यों से गुरु में अनेक शुभ लक्षण (जैसा श्रोत्रियता ब्रह्मनिष्ठता ब्रह्मज्ञता वेदपारंगतता ज्ञानवैराग्य संपन्नता जितेन्द्रियता इत्यादि) होने चाहियें और सच भी है कि गुरु से बढ़ कर और किसी का आदर नहीं क्योंकि यह जीव और ईश्वर का विचवई बनता है- जीवों के पुण्य पाप का बोझा अपने सिर लेता है तो अब विचार कीजिए कि अब के गुरु कैसे हैं इनमें ये शुभ गुण हैं कि नहीं- हम लोगों को तो ये गुण किसी में नहीं दिखाते बरंच ये तो पत्थर की नाव हैं आप तो डूबैंही चढ़ने वालों को भी साथ ले मरैंगे अपना तो उद्धार कर ही नहीं सकते तो दूसरों का क्या करेंगे- वृन्दियों के कोई इनको तो यही कहा करते हैं एक सिक्ख मारता है सौ गीदड़ खाते हैं कल में कोई अच्छा भगवत्परायण हो गया है अब ये उसका नाम बेंच के खाते हैं पर उस वंश में होने की लज्जा कुछ न ही कोपी समझो तो यह वृत्ति बड़ी कठिन है स्त्रियों का आना जाना इत्यादि संसर्ग इस में ऐसा हुआ है कि मनुष्य को इस वृत्ति में रह कर बहुत ही सावधान रहना चाहिये क्यों कि लोगों का विश्वास और भक्ति तुम पर तभी होगी जब तुम अपने को उस योग्य बनाओगे- हम ने माना कि तुम्हे भीतर से भक्ति नहीं है तुम क्या करो तो उसमें भी हम यही कहैंगे कि दुनियाँ देखने मकर से " नेत्र और हाथ पैर स्थिर करके बैठे रहा करो राम राम मुख से कहा करो तो भीतर से भक्ति न होगी तो भी लोग तुम्हें कहेंगे कि नहीं बाबाजी बड़े जितेन्द्रिय और भजनानंदी हैं- और जो तुम हुड़दंगपना करोगे तो तुम्हारी सब जीविका जाती रहेगी और प्रतिष्ठा गई तो जीविका भी गई क्योंकि इस जीविका में तो प्रतिष्ठा ही मुख्य है सो इसे बदले अब के गुरु लोग भीतर बाहर दोनों से चौपट- एक महात्मा ...

[illegible]

ये अजगरजी उस जन्मके गुरू और ये सब चेले हैं [illegible] ये उद्यम नहीं करते के चेले तो बना लिये तो अब ये इस जन्म में इन्हें काट काट के खाते हैं - सच है जब अपने को उस योग्य समझ ले तब किसी को शिष्य करे पर तुमको बहुत लोगों से विशेष आश्चर्य चेलों पर आता है कि भला वे तो जैसे हैं सो जानता है आप क्या समझ के उनके चेले हुए - मनुष्य को सब बात में अपना भला बुरा सोचना अवश्य है तो जब तुम देखते हो कि गुरूजी की यह दशा है तो तुम क्यों उनसे मुड़वाने जाते हो ? क्या अपने घरबार रुपया और बहू बेटी तुमको भारी पड़ी हैं ? हा ! अरे अब तो समझो देखो यह काल अंधकार में पड़े रहने का नहीं है तो जब तुम्हारी जड़ धर्म के उपदेश ही में दोष होगा तो और किस बात की तुम से आशा होगी

भारतवर्ष में निकम्मे बहुत हैं

पन्द्रह करोड़ आर्यों में काम करने वाले बहुत थोड़े हैं आधी तो स्त्री हैं जिन्में आधी अर्थात् पौने चार करोड़ के लगभग अवश्य निकम्मी हैं और वही दो करोड़ के पास पास अशक्त अंधे बालक इत्यादि हैं तो भला इनका न काम करना तो सहा भी जा सकता है तीन करोड़ के लगभग सन्यासी बैरागी गुरू और उतने ही ब्राह्मण जिनकी केवल पराया खाने की वृत्ति है नहीं सहे जाते क्योंकि तीयांश मनुष्यमात्र काम करने वाले बचगए तो एक के श्रम में तीन खांय यह कैसे अंधेर की बात है - और फिर इस बिना श्रम के पराया खाने में दोष यह होता है कि उन्हें प्रथम तो परिश्रम बिना अन्न नहीं पचता इससे संतति निर्बल और देश में रोग फैलता है दूसरे निरुद्यम रहने से वे क्लीब और कायर हो जाते हैं तीसरे उन्हें कोई काम तो है ई नहीं इस से उन्हें जूआ रण्डीबाजी चोरी इत्यादि बुरी बातें सूझती हैं - इस से बदमाशी फैलती है और सब से बढ़ कर हानि यह होती है कि उनके काम न करने से अन्न और वस्तु महंगी होती है क्योंकि यही निरुद्यमी लोग जो जोतें बोएं शिल्प सीखें तो कितनी वस्तु और अन्न देश में विशेष होने लगे - क्योंकि प्रथम तो यहां के धनाढ्य प्रायः निरुद्यमी होते हैं तो धनाढ्य, स्त्री, बाल, वृद्ध, आतुर, ब्राह्मण, गुरु, बैरागी, और फक्कड़ इत्यादि इतने लोग यहां निरुद्यमी निकले - कि देश इन से पूर्ण होगया और इन की कृपा से रोग निर्बलता मूर्खता दुर्व्यसन महंगी इत्यादि अनेक अमङ्गल हुए तो अब इनके मिटाने के दो ही उपाय हैं प्रथम तो राज्य से सब को कुछ उद्यम करने की अवश्य आज्ञा हो दूसरे दान देने वाले भी पात्रापात्र का विचार अवश्य करें क्योंकि जब किसी को दान दें तो यह अवश्य सोच लें कि प्रथम तो यह यदि हम लोगों से कुछ न पावें तो और प्रकार से भी अपनी आजीविका कर सकै वा नहीं दूसरे हमारे दिये हुए अन्न को यह वेदपाठ वा धर्म्म चिंतन में पचावेगा कि दालमण्डी में घूम घूम के और लोगों को गाली दे दे के यदि दूसरे प्रकार से पचावेगा तो तुम सोचो कि सब अनर्थ के मूल तुम्ही हुए तुम तो दान पुण्य को देते हो पर उस से कितना पाप होता है यह नहीं सोचते - यदि उस मनुष्य को तुम न देते तो अवश्य कोई व्यापार करता - दो ही दिन भूखे रहने में मस्ती भूल जाती तो अवश्य कुछ उद्यम सूझता पर उसके नाश करने वाले तो वे हैं जो उसको देते हैं - क्या शास्त्र में ऐसे ही लोगों को देना पुण्य है जिनके देने से देश का सत्यानाश हो ? कदापि नहीं - तो फिर अब तक क्यों इन निरुद्यमियों की जीविका चलती है जिससे सब अनर्थ ही होते हैं - धिक्कार है उस देश पर जिसकी स्त्रियां तो छिनाला करके और पुरुष बिना परिश्रम ही रुपया कमांय - तुम्हारा नाम पुरुष है तो तुम को किसी के सामने हाथ फैलाने में लज्जा नहीं आती - तुम्हारे हाथ पैर भगवान् की कृपा से सब चलते हैं तब तुम दूसरों से क्यों मुंह खोल के मांगते हो उद्यम करो जिस से तुम्हारा और देश दोनों का कल्याण है पर तुम क्या करो हम लोगों ने दे दे के तुम्हारी राह बिगाड़ी है - परंतु अब देने वाले और लेने वाले दोनों इस विषय पर सोचें क्योंकि सोचने का यही अवसर है फिर कब सोचोगे

स्वधर्म

श्रीमद्भगवद्गीता में इस बात पर बड़ा आग्रह किया है कि मनुष्य को अपना ही धर्म मानना श्रेष्ठ है यथा स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। वरञ्च श्री भगवद्गीता की प्रवृत्ति ही इसी पर है कि अर्जुन को स्वधर्म निष्ठ करें तो जब हम आर्य्य लोगों का मूल और मुख्य शास्त्र हम को स्वधर्म निष्ठ होने की आज्ञा देता है तब हम लोगों की रुचि स्वधर्म पर न हो यह बड़े सोच की बात है यद्यपि शास्त्र में तो हमारे कथित विषय का प्रतिपादन बहुत मिलेगा परन्तु हम यहां पर उसको केवल लोक रीति से सिद्ध करते हैं कि मनुष्य मात्र को केवल स्वधर्म निष्ठ होना योग्य है। हम को सबके पहिले यह कहना उचित है कि अब के लोग धर्म को वाद करके सिद्ध करते हैं परन्तु इस में एक बड़ा भारी दोष है कि वाद वि

वाद में सिद्धांत और जय पराजय बुद्धिके हाल हैं वाद करती समय जिसकी बुद्धि बढ़ गई और काम कर गई वही जीता परन्तु इस जीतने से कुछ उस वादका अंत नहीं हुआ क्यों कि उसी हारी हुई बुद्धि को अभी सोचने और फैलने का अवकाश शेष है इसी से हम कहते हैं कि बुद्धिका किया हुआ धर्म विषयक सिद्धान्त अप्रमाण का नहीं होता आज हमने घण्टों के सिर खाली करने में सोचा कि नहीं हम हिन्दुओं का मत किसी कामका नहीं मुसल्मान वा ईसाई लोगोंका धर्म अच्छा और ऐसा सोचके हमने आज वह धर्म छोड़ दिया कल हमारी बुद्धि फिर गई और हमने दूसराही धर्म अच्छा सोचा परसों कोई तीसरीही बात बुद्धिमें आई तो ऐसी बुद्धिका प्रमाण क्या कि हम उसपर भरोसा करके अपना सनातन धर्म छोड़दें क्योंकि इसका ठीका लेने वाला कौन है कि जो समझ हमें आज किरिस्तान वा अन्यमतपर विश्वास दिलाती है वह समझ हमारी सदा ऐसी हीस्थिर रहैगी इस्से यह सिद्धान्त हुआ कि आप अपनी बुद्धिके भरोसे पर धर्मका त्याग वा ग्रहण नहीं करना क्यों कि ईश्वरको प्रत्यक्ष करके कोई मतवाले न दिखा देंगे यह किस के यहाँ चिट्ठी आई है कि भगवान् ने ईसाई वा और मत वालों को अपने पास बैठाया और हिन्दुओं को निकाल दिया तो यह सिद्ध हुआ कि ऐसे वाद में अपनी बुद्धि नहीं लगानी जिस धर्म में भगवान ने जन्म दिया है उसी को आजीवन मानना चाहिये क्यों कि संगत वा लोभ वा भय वा और किसी प्रकार से दूसरे का धर्म मान लिया तो वह कच्चापन है रंग पक्का वही जिसमें दूसरे रंग न लगैं "नजातु कामान्नभयान्नलोभात् धर्मन्त्यजज्जीवितस्यापिहेतोः" प्राणकण्ठ में आजाँय पर अपने धर्म से विश्वास न उठे हमारा जन्म जिस धर्म में भगवान ने दिया उसीके मानने से वह भी प्रसन्न रहैगा यद्यपि सबका स्वामी वही है तौभी जैसे एक कोई गृहस्थ है और उसकी स्त्री पति भावसे माता वात्सल्य से बहिन भ्रातृभाव से कन्या पितृभावसे उसको सब अलग अलग भजती हैं तो माको देखकर स्त्री उसको बेटा पुकारे वा कन्या पति पुकारे तो जैसे वह गृहस्थ मनुष्य रुष्ट होगा वैसेही भगवानने हमें जिस भाव से उसको मानने को उत्पन्न किया है उसको छोड़के दूसरे भाव से मानै तो भगवान् निस्सन्देह अप्रसन्न होगा हमारी सृष्टि और स्वभाव वा रंचार स्नान करनेका फलादि खानेका स्वच्छ रहनेका बना है तो हम इस स्वभाव सिद्ध धर्मको छोड़कर क्यों अन्य धर्मका आश्रय करैं और लोक में निंदित हों क्यों कि और धर्म माननेसे स्वर्ग मिलने को होगा सो तो मरे पीछे मिलेगा परन्तु नर्क यहीं मिलगया कि लोक में धिक धिक होगई इस्से हमारा मत यही है कि मनुष्य मात्र को उचित है कि स्वधर्म निष्ठ हो अपने धर्म की वृद्धि करें दूसरे मत की ओर स्वप्न में भी न देखें॥

हिन्दू के बदले आर्य्य शब्द

हम लोग अपने मुख से हिन्दू कहके काले गुलाम दस्यु और जित क्यों बनते हैं? क्या इसके बदले हमारे पास दूसरा शब्द नहीं है? क्या शास्त्रों में हम लोगों को हिन्दूही लिखा है? कदापि नहीं हम लोगों का नाम शास्त्र में आर्य है "आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् तयोरेवांतरं गिर्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः" क्योंकि देश का नाम आर्य्यावर्त्त तभी होगा जब वह आर्य्यों से आवृत होगा तो अब हम समाचार पत्र के संपादकों और पुस्तक लेखकों से यह प्रार्थना करते हैं कि वे हिन्दू शब्द के बदले आर्य्य शब्द का प्रयोग करैं और इस विषय में जो शंका समाधान हो वह भी प्रगट करैं॥

पब्लिक लाइब्रेरी

कहाँ है बनारस अखबार जी — इस पुस्तकालय के लिखाध्यक्ष राय संकटा प्रसाद की योग्यता देखैं — यह उन्हीके परिश्रमका फलथा कि गत शुक्रवार को उस पुस्तकालय की नेव इस शोभाके साथ दी गई थी जिसको पूर्वोक्त पत्रने हँसी से एक व्यर्थ कलंक लगाया था — हमलोगों को ऐसे परिश्रमी और देशोपकारी का सर्वदा धन्यवाद और स्तुति करनी चाहिये न कि जैसे अपने ईर्षासे कुछका कुछ कहा इस नेव दियेजाने से अब इसके स्थिर होने में कोई संदेह न रहा और निश्चय अब इसकी दिन दिन वृद्धि होगी — एवमस्तु।

समाचारावली

प्रस्तुत वर्ष में एक लाख साठ हजार मनुष्य मक्का यात्रा करने गए थे।

पुरी में रथयात्रा के निमित्त साठ हजार मनुष्य एकत्र हुए थे।

अधिक जल बरसने से साँभर झील का काम बन्द है॥

प्रेरितपत्र

जो पत्र इन स्तंभो में प्रकाश होते हैं हम उनके उत्तर दाता नहीं हो सक्ते

श्रीमान् क॰ व॰ न॰ सु॰ सं॰ समीपेषु।

वाह रे शुभ चिंतकत्व वाह रे निर्पक्ष न्याय कर्त्तृत्व वाह रे सद्धर्म वेत्तृत्व बलिहारी है या बुद्धिपर यदि ऐसे शुभचिन्तक निर्पक्ष न्याय कर्त्ता सद्धर्म वेत्ता दो चार और भी इस पृथ्वी में होते तो तो सब पृथ्वी ही कृतकृत्य हो हो जाती ? जो भरतखण्डामृत के संपादक की पाण्डित्यता आपको ज्ञात हुई है कि वे वेद और स्मृति नहीं जानते तो आप तो बहुत जानते हैं ? वाह क्या अच्छा दयानन्द सरस्वती का उत्कर्ष लिखा है कि सैंकडो ब्राह्मण क्षत्री और वैश्यों को यज्ञोपवीत पहिरा दिये और गायत्री संध्योपासनादि सिखा दिये तो क्या पूर्व समयों के बालक यज्ञोपवीत पहिरते थे ? ब्राम्हण क्षत्री वैश्यों के बालक यज्ञोपवीत नहीं पहिरते थे कि अब दयानंद सरस्वती के पहिराये से पहिरे हैं – क्या अच्छा मनुस्मृति का आपको बोध है ? कि और प्रकर्ण का श्लोक और प्रकर्ण में धर के द्विजों को अन्धे बनाते हो चित्रकारी शिल्प व्यवहार से किसको जीवन निंदित है ? यह बोध आपही को है – जो परब्रह्म का रूप नहीं है और किसी को नहीं देखा है इस कथन से भी प्रतीत हुआ कि ठीक२ आपको वेद स्मृती में प्रवेश है तथा श्री भागवतजी का बोध आपको अच्छा है कि ऐसे रत्नाकर में से एक घोंघा आपको मिला है जिसकी व्याख्या लिखते भी हाथ खड़े होगये सच कहते हैं कि कोआ मानसरोवर में जाय तो भी पुरीष ही में दृष्टि रखती है जो भगवद्विमुख पाखण्डी के निन्दा प्रतिपादक श्लोक थे उन्हें मूर्ति निन्दा में जोड़ते लाज भी न लगी और (न ह्यम्मयानि तीर्थानीति) इस श्लोक में भी केवल भक्तों का उत्कर्ष वर्णन है क्योंकि (ते पुनन्त्युरुकालेन) प्रत्यक्ष प्रतिपादन है और ... का अर्थ है कुछ निषेधार्थ में नहीं है परंच इसके लेखक महाशय के नेत्र में मन्द दृष्टि होगी वा श्रीधरी श्री वैष्णवतोषिणी सारार्थदर्शिनी पाखण्डि मुखमर्दनादि टीका का दर्शन नहीं किया है वा किसी पण्डित से यह तीन श्लोक लिख लिया होगा – क्यों कि यदि आप देखते तो क्या निम्नलिखित श्लोक न दृष्टि पड़ते ? महापुरुषमभ्यर्च्य मूर्त्याभिमतयात्मनः । अर्चादौ हृदये चापि यथालब्धोपचारकैः ॥ सांगोपांगां सपार्षदां तां तां मूर्तिं स्वमन्त्रतः । पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैः स्नानवासोविभूषणैः गंधमाल्याक्षतस्रग्भिर्धूपदीपोपहारकैः । सांगं संपूज्य विधिवत्स्तवैः स्तुत्वा नमेद्धरिम् ॥ शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता ॥ इत्यादि शतशः श्लोक एकादश स्कंध में हैं तथा – श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च नित्यदा । इत्यादि सहस्रशः श्लोक समस्त भागवत में भरे हैं (अतिपापसमाचाराः कर्मण्यनधिकारिणः । शालग्रामार्चकास्ते तेनैव यान्ति परमालयम् ॥ कामक्रोधप्रलोभैश्च व्याप्तो योऽतीवनराधमः सोपि याति हरेर्लोकं शालग्रामशिलार्चनात् ॥ अशुचिर्वा दुराचारी सत्यशौचविवर्जितः । शालग्रामशिलां स्पृष्ट्वा सद्य एव शुचिर्भवेत् ॥ पाद्मे ॥ जम्बुद्वीपे महापुण्ये वर्षे वै भारते शुभे । अर्चायां सन्निधिर्विष्णोर्नैतरेषु कदाचन ॥ भारतेस्मिन्महावर्षे नित्यं सन्निहितो हरिः । सर्वावस्थासु सौलभ्यमर्चायां विंदते जनैः । विष्णुयामले । मृदा वा रम्यरत्नेन ताम्रेण रजतेन वा । कृत्वा दारुमयं बिंबमर्चयेत्काञ्चनेन वा । और देवलक नाम वशिष्ठ स्मृति में गणेशादि के अर्चकों का है कुछ भगवदर्चक का नाम नहीं है यथा च गणेशं भैरवं दुर्गां रुद्रादींश्च प्रदैवताम् । योर्चयेद्वृत्तिमान् विप्रः स वै देवलकः स्मृतः । वेदवेद्यं ब्रह्मणेशं भुक्तिमुक्तिप्रदं हरिम् । यो अर्चको ब्राह्मणश्रेष्ठो न च देवलनामकः ॥ बहिर्देवालकस्पृष्टा सवासा जलमाविशेत् । इत्यादि प्रकार से देवलक ब्राह्मण की निन्दा लिखी है कुछ भगवन्मूर्ति के अर्चकों की निन्दा नहीं है । सब ग्रन्थों में लाखहीं श्लोक पूजन विधायक विदित हैं परन्तु उलूक के लेखे सूर्य ही नहीं चढ़ा है – यदि एक में अब कोई नवीन ग्रन्थ बना होय तिस में प्रतिमापूजन निषेध होय तो आश्चर्य नहीं है और तो सब स्मृति श्रुतियों में अनेक वाक्य भरे हैं इत्यलम् पल्लवितेन ॥

२ अगस्त सन् १८७४ नदीयानुचर अमृतसर ॥

कविवचनसुधा का मैगजीन की पृथक् न्योछावर !

अग्रिम ६) वार्षिक है, और पीछे देने से ७) देना होगा – परन्तु जो दोनों पत्र लेंगे उनको अग्रिम केवल १०) और पीछे १२) रु॰ देना होगा और महसूल ३) अलग है तथा कवि॰ सु॰ एक प्रति का =) और मैगजीन के प्रति का पांच ।) मूल्य है और इश्तिहार का प्रति पंक्ति =) है विशेष पूछने से ज्ञात होगा ॥

बनारस में श्रीहरिश्चन्द्र चन्द्रिका यन्त्रालय के कार्याध्यक्षों ने सम्पादकों के अर्थ छापा ॥

रजिस्टरी नम्बर २

NATIONAL LIBRARY CALCUTTA

कविवचनसुधा

साप्ताहिकपत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रसखानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जिय मानि १

सुधा सदा सुर पुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग। तासों आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग २

जिल्द ५ काशी चन्द्रवार श्रावण शुक्ल ५ संवत १९३१ नम्बर ४३

कविवचनसुधा

चन्द्रवार १७ अगस्त सन् १८७५

दुःखन्तु दुष्टैः सर्वां मा भवतु रतिरिनिस्वात्व मुक्ताल्य धर्म्मी स्वायत्ता स्यात्सुजनगद्धृत करतु कृती स्वस्वयोमत्सराः स्युः स्त्री पुंसौ तुल्यसौख्यावत्त भवतु जनौ मोदितोऽप्यदुःखं ग्राम्यौ क्लिश्वविदूरे नवतु रुचिरलं काव्यपीयूषवृष्टिः॥

अथ श्रावणकृत्यं

श्रावण मास में शाक नहीं खाना- श्रावण कृत्य में कुछ बहुत विशेष नहीं है परन्तु किसी किसी पुराण का मत है कि श्रावण शिवमास है इस में नित्य वा विशेषतः सोमवार को शिवव्रत वा शिवपूजन करै परन्तु यह सकाम है

श्रावण शुक्ल तृतीया को मधुश्रवाव्रत और श्रीराधिकाजी का विशेष पूजन करना राधोल्लास महातन्त्र में लिखा है कि भाद्र शुक्ला ८ कार्त्तिक शुक्ला १५ और श्रावण शुक्ला तृतीया को जो श्रीवृन्दावनेश्वरी का पूजन वा व्रत करते हैं उन को बड़ा फल मिलता है।

श्रावण शुक्ला चतुर्थी गणेश व्रत।

श्रावण शुक्ला ५ नागपंचमी। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में लिखा है कि श्रावण की पञ्चमी को जो नाग का पूजन करते हैं उन को सर्प का भय नहीं होता

श्रावण शुक्ल १२ पवित्रारोपण इस की सविस्तर विधि आगे लिखी है।

श्रावण शुक्ला १५ उपाकर्म अर्थात् श्रावणी और तदङ्गभूत रक्षाबन्धन।

पवित्रा॥

कार्त्तिक में व्रत और चैत्र में दमनारोपण और श्रावण में पवित्रारोपण यह नित्य कर्म है श्रावण के शुक्ल पक्ष में द्वादशी को वैष्णव लोग श्रीकृष्ण को पवित्रा समर्पण अवश्य करें (नि. सि. तथा उत्सव प्रतान में, और पवित्रारोपण की विधि निर्सहैयपारिसत्व परिशिष्ट तथा योगसार में) जो श्रावण में पवित्रारोपण नहीं करते उनकी वर्ष भर की पूजा निष्फल हो जाती है और जो श्रावण में पवित्रा समर्पण करता है उसको वर्ष भर तक नित्य नवीन वस्त्र समर्पण करने का फल होता है इसका बौधायन स्मृति विष्णु रहस्य महासंहिता और योगसार इत्यादि ग्रन्थों में सविस्तर माहात्म्य और कथा लिखी है यहां विस्तर भय से नहीं लिखते अथ विधिः सुवर्ण चांदी तांबा रेशम कमल कपास कुश वा कासके सूतों का पवित्रा बनाना- वा ब्राह्मणी का काता सूत लेकर तीन को एक कर फिर उसके तीन सूत को एक करके चरण घुटने वा कमर तक लम्बा पवित्रा बनावे उत्तम तो नौ सत्ताईस सूत के एक सौ आठ वा तीन सौ साठ के ग्रन्थ वा चरण सम लम्बा छत्तीस वा यथारुचि सम संख्या की अङ्गुल अङ्गुल है गांठि से बंधा होता है मध्यम घुटने तक का उसका आधा करके चौबिस गांठ का और सबसे हीन उससे भी आधा कमर का बारह गांठ का बनावे और सब से उत्तम पवित्रा वनमाला कहाते हैं-

उसमें मुकुट के ऊपर से लेकर चरणारविंद तक लंब्या एक हजार आठ उसी सूत का एक सौ आठ गांठ बनावे और जो सूत का न होतो यथा शोभा सुवर्ण इत्यादि का बनावे और जैसे भगवान का पवित्रा बनावें वैसे ही शिताम्बर का बारह गांठ का उनके परिवार देवता का बनावे और गुरु का २७ फेर का और अपने वास्ते २६ फेर का बनाकर पंचगव्य से शुद्ध करके अपने जप के मंत्र से १०८ बेर अभिमंत्रित करै और फिर उसको चंदन केसर इत्यादि सुगन्ध द्रव्यों में रंगे और पवित्रा बहुत सुन्दर बनावे दशमी के दिन यह बना के एकादशी के दिन सबेरे भगवान् का नित्य पूजन करके तब पवित्रा अधिवासन करने को प्रार्थना करै तन्मन्त्रः क्रियालोप विघातार्थं यत्त्वया विहितं मम मये तन्क्रियतेदेव तव तुष्ट्यै पवित्रकम् नमे विघ्नो भवेत्तत्र कुरु नाथ दयाम्मयि। सर्वथा सर्वदा विष्णो मम त्वं परमा गतिः। उपवासेन देवत्वा तोषयामि जगत्पते। कामक्रोधादयोऽप्येते न मे स्युर्व्रतघातकाः अद्य प्रभृति देवेश यावद्वै शेषिकं दिनं तावद्रक्षा त्वया कार्या सर्वस्यास्य नमोस्तु ते फिर गोक करके कुशादि पूजन और मंगल की सामग्री रख के सर्वतोभद्र के बीच में पूर्ण कलश रख के उसपर पवित्रा का इस मंत्र से आवाहन करै ओं साम्वत्सरस्य यागस्य पवित्रीकरणाय भो। विष्णुलोकात्पवित्राद्य आगच्छेह नमोस्तु ते। फिर पवित्रा के अंग देवता ओं का आवाहन और पूजन करै यथा सत्री देवेभ्यो ब्रह्मविष्णु शिवेभ्यो नमः प्रणव सोमाग्नि रुद्र ब्रह्म नाग चन्द्र सूर्य शिव विश्वे देवेभ्य स्तन्त्वधिदेवताभ्यो नमः फिर गांठों की पूजा करै क्रियायै नमः पौरुष्यै वीरायै अपराजितायै जयायै विजयायै मुक्तिदायै सदाशिवायै मनोमय्यै सर्वतोमुख्यै नमः फिर उत्तम मध्यम कनिष्ठ तीनों पवित्रों को इन मंत्रों से अधिवासन करै उत्तम यथा ओं सर्वाभरण चिन्तांग सर्वदेवनमस्कृत। लावण्य रूप पवित्र मनन्तोऽनन्त रूप समाश्रय मध्यम ओं सर्वलोक रक्षार्थं सर्वज्ञान रसात्मक। निवृत्त रूप विश्वात्मन् सध्यम समाश्रय कनिष्ठ: ओं अति वेग मरुद्वेग पुरुषात्मन् इदस्पते कालीयो हे पभो देवते जसा स्वसमाश्रय फिर तिनी मरका मदद लेकर भगवान के श्री हस्त में बांधे मन्त्र ओं संवत्सरकृतार्च्चा सम्पूर्णफलदायिने। पवित्रीकरणायेमं कौलुक न्यस्तु तेनमः फिर धूप दीप नैवेद्य इत्यादि से पूजन करके प्रार्थना करै। आमन्त्रितोसि देवेश पुराणपुरुषोत्तम। मंत्रेणानेन लोकेश परिवार के आगे इन्द्र भगवन्नीशविभो ... नैकार करु प्रातरत्वाम्पूजयिष्या मि सान्निध्यं कुरु केशव क्षीरोदधि महानाग शय्यावस्थित विग्रह प्रातस्त्वाम्पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु ते नमः। फिर आरति पुष्पांजलि नमस्कार करके गंध पवित्रक अर्थात् बारह सूत का छोटा गंध पवित्रक भगवान के चरणारविंद पर समर्पण करै मंत्रः ओं विष्णुतेजोद्भवं रम्यं सर्वपातकनाशनं सर्वकामप्रदं देव तवाङ्गे धारयाम्यहम्। फिर नृसिंह बीज से वा स्यानि दृष्टी के रा इस मंत्र से कवच से पवित्रा की सर्वतो रक्षा करके रात्र को जागरण करै प्रातःकाल नित्यकर्म नित्य पूजन करके भगवान की विशेष पूजा करै और अङ्ग देवता ओं का पूजन करके घन्टा शंख नाम संकीर्तन वाद्य इत्यादि बजाता हुआ इस मंत्र से भगवान पवित्रा को पहिरावे ओं कृष्ण कृष्ण नमस्तुभ्यं गृहाणेदं पवित्रकं पवित्रकरणार्थाय वर्षपूजाफलप्रदं पवित्रकं कुरुष्वाद्य यन्मया दुष्कृतं कृतम्। शुद्धो भवाम्यहं देव त्वत्प्रसादाज्जनार्दन फिर महापूजा आरती पुष्पांजली करके इन मंत्रों से प्रार्थना करै वनमालां यथा देव कौस्तुभं सततं हृदि तद्वत्पवित्रतन्तूंश्च पूजां च हृदये वह जानताऽजानता वापि न कृतं यत्तवार्चनं। केनचिद्विघ्नदोषेण परिपूर्णं तदस्तु मे। मणिविद्रुममालाभिर्मन्दारकुसुमादिभिः इयं सांवत्सरी पूजा गृहाण मम केशव जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज। फिर अग्नि का पूजन होम करके अग्नि में पवित्रा समर्पण करके मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं जनार्दन। यत्कृतं मे देवेश परिपूर्णन्तदस्तु मे। इस मंत्र... प्रार्थना करके गुरु का यथाशक्ति पूजन करके गुरु को पवित्रा समर्पण करै फिर वैष्णवों को पवित्रा समर्पण करै फिर आप पवित्रा पहिने और बन्धु ब्राह्मण और वैष्णवों को भोजन करावै यह पवित्रा प्रभु को एक महीने वा पक्ष वा तीन दिन वा एक दिन तक धारण कराए रहे जब तक पवित्रा रहे नित्य विशेष पूजन करै जब विसर्जन करै तो इस मंत्र से पूजन करके विसर्जन करै ओं सांवत्सरीमिमां पूजां संपाद्य विधिवन्मम। व्रजेदानीं पवित्रत्वं विष्णुलोकं विसर्जितः यदि श्रावण की एकादशी द्वादशी को शुद्ध अवकाश न हो जाय तो भादों में पवित्रा समर्पण करै जब तक भगवान न जागैं तब तक इसके समर्पण की अवधि है।

स्वच्छन्दता

स्वच्छन्दता भी मनुष्य के लिये कैसी अच्छी बात है

मनुजीने दीक्षको कहाहै "सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्" क्याही अच्छा होता यदि ईश्वर मनुष्यमात्र को स्वतन्त्र बनाता सो नहीं किया किन्तु एक को दूसरे के आधीन कर रक्खा है लड़का माता पिता के आधीन रहता है स्त्री पति वा पुत्र के आधीन प्रजा राजा के वश में हो जाती है वह पुरुष इन्द्रियों के। शिक्षित राजा गवर्नर लार्ड कोंसे आधीन सेवक स्वामी निज होनाके प्रजाकी स्वच्छन्दता राजा के आधीन है पण्डित और ब्राह्मणोंकी स्वच्छन्दताओं में रामभजन बद्ध लगा दिया दूसरे राजे महाराजनोंकी स्वाधीनता घरवाली के हाथमें रहती है और अंग्रेजोंकी सिविल सर्विस साहबों के अधिकार में इत्यादि दृष्टिफैलाकर जो देखिये तो इस असार संसार में कोई स्वाधीन नहीं है और कुछ भी तो किसी में दूषण होती है और किसीमें भूषण किसीमें स्वतन्त्रता दूषण है और किसीमें वही भूषण हो जाती है स्वतंत्रता अनेक प्रकार की है एक स्वतन्त्रता आत्मोन्नति की भी है पर यह ऐसी स्वतन्त्रता है कि अपने जाति वा कुल अपने देश और अपने पूर्व पुरुष के सदसत् वर्ग के आचरण और व्यवहार में अत्यन्तही प्रतिकूल है कितने लोग लोक लज्जा त्याग दुर्व्यसन में फँस स्वतन्त्र होजाते हैं जैसा जुआरी वेश्या का पुरुष मद्यप इत्यादि यह स्वच्छन्दता ऐसीहै कि जिससे ऐसे लोग शिष्टजनोंकी दृष्टि में हलके और तुच्छ जँचते हैं एक स्वतंत्रता चोर वा लुटेरे लोगोंमें होतीहै और यह ऐसी स्वतंत्रताहै जो और लोगोंको अत्यन्तही हानिकारक है और परिणाम में उनके लिये भी दुःखदायी होतीहै ये सब स्वतंत्रता ऐसीहैं कि जो एकको लाभजनक और अनुकूल है वो दूसरे को हानिकार और प्रतिकूल है यों तो सब कोई अपने मनका राजाहै और जो अपने को अनुकूल वा प्रतिकूल है उसके विवेचनकी बुद्धि सबको अलग अलग दी गई पर स्वतंत्रता हम उसे कहते हैं जो अनुकूल वेदनीय और लाभजनक सबको हो और प्रतिकूल वेदनीय और हानिकारक किसीको न हो ऐसी स्वतंत्रता राजकीय नियमों में है और वह ऐसी स्वच्छन्दताहै जो हमारे इस समय के राजा के राज्य प्रबन्ध का भूषण है जिसने प्रजा को कैसी स्वतंत्रता दे दियाहै कि किसीको किसीबातकी रोकटोक नहीं है शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं जिसके राजकीय नियम सबके लिये एकसे हैं मुसलमानों और किसी राजाओंके राज्यमें यह बात कहां थी जिनके अत्याचार का स्मरणकर हमारी लेखनी भी भयसे कम्पायमान होती है इनके राज्यकी स्थिरता का भी यही मुख्य कारण है। इत्यलम्।

आपतो निरे वही हैं—रूपये से अपने का क्या रोना—निज भुज बल से पैर बढ़ाया—यहां सत्रह अठारह वा तीस का आधार नहीं उसमें भी आधार का क्या इनकी बातों में हम क्यों आते हो यहां कुछ आधार ने भला किया अब कुछ उनके प्रति पसी करेंगे—य हां दो एक समान—पर हां अपने मतलब से अपनी जाति का उपकारी अच्छा और मांस का रोना आप की क्यों—आपको कौन अमनुष्य कहे देता है—निरे लिखने वाले भव हो—उमेदवार हुआ लिखमारा—आधार भ्रष्ट होके आठ—बिना अन्त भटकते फिरते हो—कब तुम विलेसु नगाड़े पर हम क्या करें इसी पर तो आफ़तां हि-स्कीहाई याद आती है—क्या हुआ सो हो तो अपने हैं।

हम विद्वान बन्धु को सदुपदेश के धन्यवादी हैं परन्तु बनारस अखबार से तब भी हमारा यह वक्तव्य सिद्ध भाव से है कि एक तो ये शब्दों को शुद्ध लिखें दूसरे जिस सप्ताह में किसी से कुछ मुद्रा पावें उसी सप्ताह में उसकी स्तुति किया करें क्योंकि बहुधा ऐसी ही जाती है तीसरे प्रतिज्ञा विषय को बनावटी भी भेद म त्याग करें कि लाघविक सत्र चौथे किसी की बुराई ऐसी बुरी चाल से न करें जैसा लायब्रेरी के कैटलॉग की थी।

समाचारावली

लण्डनकी अठारह हजार स्त्रियोंने पार्लियामेण्टकी सभा में सभासद होने के निमित्त निवेदन कियाहै।

रूस के महाराज ने लण्डन से फिरते समय वहां के दरिद्रों को दस हजार रुपये दान दिये।

मंद्राज के किसी शिवालय में एक लड़के को किसी ने बलिदान दियाहै।

फ्रेण्ड आफ इण्डिया से ज्ञात होता है कि अकालफण्ड के निमित्त अठारह मन का भारी एक कछुआ पकड़ा गया।

पण्ढरपुर में आषाढ़ शुद्ध एकादशी को एक लाख पचीस हजार यात्री एकत्र हुए थे।

सिन्ध में भयंकर जलप्रलय से सिन्धु की सीमा की पचीस सौ मील पृथ्वी में केवल पचीस मील छोड़ के शेष सब प्रान्त जल मग्न हो गये।

तापी नदी का पुल बांधने के निमित्त लोग सब प्रजा में गवर्नर साहब से विचार कर रहे हैं।

जो पत्र इन स्तंभों में प्रकाश होते हैं हम उनके उत्तर दाता नहीं हो सकते ॥

श्रीमान् क॰ व॰ सु॰ संपादकेषु ॥

॥ शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ॥

धर्म ज्ञान का प्रथम सोपान देह रक्षा है, जो चिकित्सा शास्त्र का मूलीभूत प्रतिपाद्य है, लेकिन उसके जानने के लिए और भी बहुत से व्यतिरेक ज्ञान और शास्त्रों को कारण है। तिसे भी योगशास्त्र को मूलीभूत कारणता कही जाती है, जो विपरीत हित विषयों को अपने योग युक्ति से यथोचित मानी भाँति समझते हैं, इसलिये चिकित्सकों को योगशास्त्र अपेक्षित है, रसतंत्रादि योगसंहिता और चरकादि वैद्यसंहिता जान के जो चिकित्सा करते हैं वही सद्वैद्य है और आत्मवान् सब उन्हीं पर आत्मसमर्पण करते हैं, मूर्ख वा किञ्चिज्ज्ञ वैद्य पर आत्मार्पण करनेवालों को आत्महत्या के प्रायश्चित्त ही होना पड़ता है परन्तु मूर्ख वैद्य को राजा चोर के तुल्य दण्ड विधान करेगा लिखा है। यथा, पंचवा सप्तवा षड्वा यो वैद्यो निःसुसंहितः। [illegible] ऐसे परम तत्त्व चिकित्सा शास्त्र की कैसी रक्षा है, आजकल चरक सुश्रुतादि को चिकित्सा शास्त्र का चरम ग्रन्थ लोग जानते हैं, परन्तु यथार्थ आयुर्वेद जिसको कहते हैं, जिसके अध्ययन में पुण्य और प्रतिज्ञापूर्वक पाठ होता है, वो दूसरा है, भगवान् दक्ष प्रजापति को यह रस साक्षात्कार हुआ था जिस पर भगवान् तस्यति कृत श्रुति और केवेनी भाष्य है, जिसका एक श्रुति स्थल के स्थान पर है "रसो वै सः" इसके भाष्य में जितने वस्तु हैं सब अन्तर्भूत होते हैं, चरकादि ग्रन्थों में नाड़ी विवेक और रस विवेक कहीं कहीं पर सामान्य बने हैं, और इसके बिना चिकित्सित ज्ञान कैसा होगा। "रस" इस दो अक्षर के भीतर क्या नहीं है, रस दो प्रकार के हैं, आहारीय रस, (जैसे कटु, तिक्त, कषाय, अम्ल, लवण, मधुर,) और वही रस औषधों में भी छ होते हैं, जैसे कटु रस ज्वर को नाश करता है चिरायता, नीम, इत्यादि तिक्त रस मात्र खाँसी को हटाता है, वही रस का एक नाम धातु है, वह धातु देह में छ है, रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, और शुक्र, बाहर में सुवर्ण, रूपा, लोहा, इत्यादि हैं, लेकिन यह बाहरी धातु रक्त इत्यादि प्रत्येक धातु में है, डाक्टर लोग लोहा आदि को बीजरूप से मानते हैं सो प्राकृतिक मत से असंभव नहीं है, मद्दूर उन्हुल और कैंचुआ इत्यादि में ताम्र और कुल के पत्तों में पारा, मनुष्यों के बाल में से भी आरसेनिक निकलता है और हर एक जड़ी और इसी से एक एक धातु निकल सकते हैं, कोई सूक्ष्म और कोई स्थूल अंश में खास है, जिस मृत्तिका में जो खान है उस मृत्तिका से वह धातु निकलता है, और इस मत से तो सर्वत्र के मृत्तिका से सब धातु निकल सकते हैं, प्राकृतिक भाष्यकार का यह नियम है कि धातु के सम्बन्ध बिना कुछ भी नहीं होता, इसका "सर्वगं तु शक्ति सर्वव्यापी है", एवं रस्यतु शृंगार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र, " इत्यादि मन के विषयगत भाव को भी रस कहते हैं, विष यानी जिससे मृत्यु तत्काल होवे और ऐसे ही अमृत जो अब तक किसी ने नहीं देखा जिसके बिन्दु मात्र से पुनर्जीवन संपादन होता है, वहाँ तक का रस है, "शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः" इस अमरकोश एतने अर्थ इसके हैं, ऐसे रस का ज्ञान बिना वैरासायनिक विद्य नहीं हो सकता अतएव जो अपना मङ्गलाभिलाषी, अथवा चिरायु के अभिलाषी, किंवा, धर्मज्ञान का अनुसंधित्सु, लोग हैं उनको सर्वप्रथम में उचित है कि रसशास्त्र का आलोचना करें जिससे चिरंजीवी और इच्छा मरण तक संपादन हो सकता है।

श्री केदारनाथ विद्याविनोद।

काशी

हसन खाँ नामक मुसलमान जो अपने को सिद्ध प्रगट करता है एक दिन राजा कुतुक के कोठी पर गया और रसायन बनवाने के निमित्त राजा साहब से बहुत कुछ कहा और प्रतिदिन पांच सात रुपये की लकड़ी गोइठा आता और एक कुंड में फूंका जाता रसायन तैयार करने की प्रतिज्ञा ४० दिन की की थी जब पांच दिन ४० दिन में बाकी रहे तब सवा सौ अशर्फी इस करार पर लिया कि इसका दूना देंगे और अशर्फी लेकर आप चल दिया जब यह बात राजा साहब को ज्ञात हुई तब कचहरी में सवाल दिया वारण्ट होकर वह पकड़ा गया।

कविवचनसुधा व मैगजीन की पृथक् न्योछावर ॥

अग्रिम ६) वार्षिक है, और पीछे देने से ७) देना होगा पर जो दोनो पत्र लेंगे उनको अग्रिम केवल १०) रु० और पीछे १२) रु० देना होगा और महसूल २) रु० अलग है, तथा क० व० सु० का एक प्रतिका =) और मैगजीन के प्रति कापी का ।) मूल्य है और इश्तिहार का प्रतिपङ्क्ति =) विशेष पूछने से ज्ञात होगा ॥

बनारस में श्रीहरिश्चन्द्र चन्द्रिका यन्त्रालय के कार्याध्यक्षों ने संपादकों के अर्थ छापा ॥